मसीही जीवन
का मूल

शिष्यत्त्व

एक शिष्यत्त्व की सेविकाई
"एक एक व्यक्ति करके, सारे संसार को जीते"

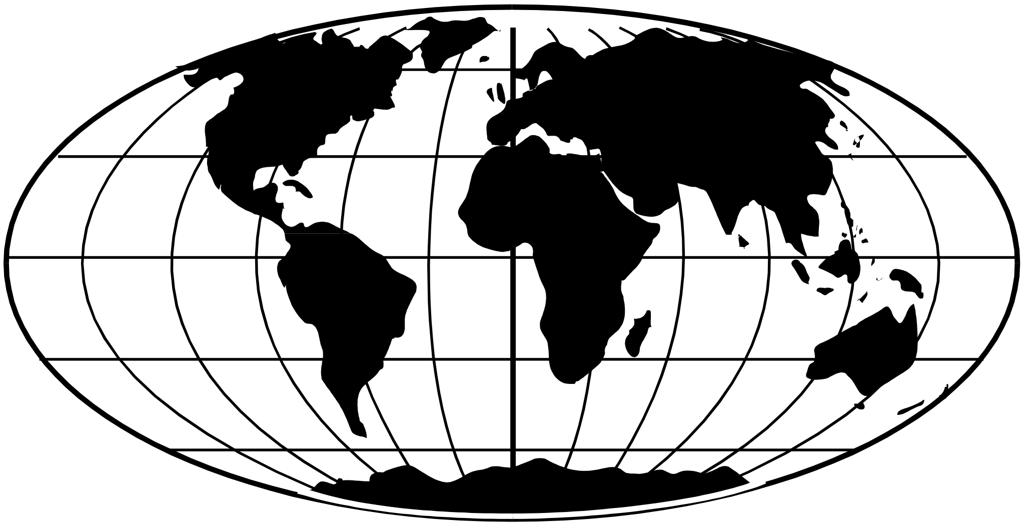

शिष्यत्त्व

शिष्यत्त्व की सेविकाई

शिष्यत्त्व की सेविकाई का दर्शन, येशू मसीह, परमेश्वर के पुत्र के महानादेश “**सब जातियों के लोगों को शिष्य बनाना है**” को पूरा करना है, मसीहियों को सुसज्जित बनाते हुए, संसार के लोगों को जीतें, उनका निर्माण करे और उन्हें येशू के लिए भेजें।

लेखक –*केनसन कूबा*

केनसन कूबा एक ग्रेजुएट है मुल्तनोमाह के बाइबल विध्यालय से। उन्होने 12 वर्ष कॅम्पस क्रूसेड फॉर क्राइस्ट के कर्मचारी के रूप में सेवा की और 6 वर्ष सम्मिलित करते हुए पापुआ न्यू गिनीआ में भी सेवकाई की। संप्रति वह जल के सूक्ष्म जीव विज्ञानी है और अपने परिवार के साथ हवाई के माउवी द्वीप में निवास करते है।

इस पुस्तक का अनुवाद हिन्दी में किया गया है और यह उत्सव की प्रतिध्वनियां मसीही केंद्र द्वारा उपलब्द कराई गई है। हम लेखक को अधिक धन्यावाद देते है कि उन्होने हमें इस पुस्तक का अनुवाद करने के लिए अनुमति दी। अधिक मात्रा में पुस्तके निम्नलिखित पते पर उपलब्ध है;

Masterbuilder Media,
11, Rockdale 2,
38/B, Rebello Road,
Bandra, Mumbai 400 050, India.
Tel: 91- 22 - 6436282 email: masterbuilder@rediffmail.com

सूचीपत्र

पाठ	पृष्ठ
शिष्यत्त्व1 का किस प्रकार प्रयोग करें	iii
1 परमेश्वर का आश्वासन	1
2 परमेश्वर की क्षमा	7
3 परमेश्वर की शक्ति	15
4 सहभागिता	23
5 वचन	29
6 प्रार्थना	35
7 साक्षी देना	43
8 आत्मिक गुणन	49
शिष्यत्त्व का करार	53

शिष्यत्त्व 1 का किस प्रकार प्रयोग करें

उद्देश्य

शिष्यत्त्व 1 की रूपरेखा मसीहियों की सहायता के लिए है जिससे वह येशू मसीह को महिमा दे सके और उन्हें सुसज्जित करें ताकि वे अन्यों को शिष्य बना सके! इसका उपयोग निजी अध्ययन, नए मसीहियो का अनुवर्तन करने के लिए, एक से एक को शिष्यत्त्व के लिए, छोटे समूह के शिष्यत्त्व या प्रशिक्षित अध्ययन के लिए है।

पुस्तक का प्रयोग

अनुवर्तन और शिष्यत्त्व

- **नए मसीहियो** को इन पाठ को तुरन्त सिखाना चाहिए, मसीही बनने के बाद कि वह अपने नए पाए विश्वास में अच्छी तरह से लीन हो जाए।
- शिष्यत्त्व1 के पाठ को दूसरे मसीहियो के साथ बाँटों उनको सहायता देते हुए कि अपने विश्वास में बढ़ें।
- **प्रशिक्षिण** और **चुनौती** दे उनको जिनके साथ आप पढ़ रहे हैं शिष्यत्त्व1 को बाँटने में दूसरो के साथ।

ग्रन्थाकार

प्रत्येक पृष्ठ के **प्रमुख भाग** में समाविष्ट है **पाठ** और दाहिने खाने में विचार, प्रश्न, सहायक सूचना, संबन्धित पद और स्मरण करने के निदेश है।

प्रक्रिया

पाठ बिना पहले से किए गए तैयारी के किया जा सकता है, या उन्हें निर्दिष्ट करके फिर अध्ययन के समय पुनर्विलोकन किया जा सकता है।

प्रमुख भाग – पाठ

▸ **पढो़** हर पाठ को, सभी वचन के संदर्भ पर सावधानी से ध्यान देते हुए।

▸ **शिक्षण** ● द्वारा संकेत किए गए एक विशेष वचन के भाग को रेखांकित, गोलाकार, या पढने के निदेश से सम्मिलित है। वह शिष्य को बाइबल में महत्त्व सत्य की खोज करने मे सहायता करती हैं।

▸ **उपयोग** सारे उपयोग को हर पाठे मे पूरा करें।

"धर्मशास्त्र का उद्देश्य केवल ज्ञान देना नहीं वरन् परिवर्तित करना है!"

दाहिना खाना इस भाग को गहरे अध्ययन के लिए पढें।

- ▸ **सहायक सूचना** अतिरिक्त सूचना देकर पाठों को अनुपूरक करती है।
- ▸ **विचार के प्रश्न** ▸द्वारा संकेत किए गए शिष्य को पाठ के महत्त्वपूर्ण सुझावो पर केन्द्रित करते है जिससे उन्हे गहरी समझ प्राप्त हो सके।
- ▸ **संबंधित पद** § द्वारा संकेत किए गए, अतिरिक्त वचनों को देखने में पूर्ती करती है। इनका परिक्षण करना चाहिए ताकि बेहतर समझ जा सके कि वचनों के पाठ के संबंध में क्या पढा रहा है।
- ▸ **स्मरण करने के निदेश** ◐द्वारा संकेत किया गया उन मुख्य वचनों को दिखलाता है जो स्मरण करने के लिए है।

1 परमेश्वर का आश्वासन

परिचय

यदि आज आपकी मृत्यु हो जाए, तो आप के पास अनन्त जीवन की क्या निश्चयता है? अपने उत्तर को नीचे रेखांकित करें ;

अनिश्चित संभवतः निश्चित

ऐसे बहुत से व्यक्ति है जो कई वर्षो से कलीसिया जाते हैं पर जिन्हें अब तक अनन्त जीवन की निश्चयता नहीं है। आपका येशू मसीह पर का विश्वास एक उद्धारकर्ता के रूप में का निणर्य ही इसको निश्चित करता है। निम्नलिखित चार सत्य इस महत्त्वपूर्ण निर्णय को स्पष्ट करता हैः

चार सत्य

1 परमेश्वर, हमारा सृष्टिकर्ता, हमसे प्रेम करता है

> 🕮 *"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, कि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।"*
>
> *यूह 3:16*

- उस शब्द पर गोलाकार करे जो परमेश्वर कि हमारे प्रति व्यवहार को स्पष्ट करता है।
- परमेश्वर ने अपने प्रेम को किस प्रकार प्रदर्शित किया है, उसको रेखांकित करें।
- हमें अनन्त जीवन पाने के लिए क्या करना चाहिए, रेखांकित करें।

परमेश्वर का प्रेम

प्रेम यूनानी शब्द 'अगापे' से लिया गया है जो भावनात्मक से अधिक आत्मिक प्रेम है। जबकि भावनात्मक प्रेम कई बार निजी स्वार्थ के लिए होता है, 'अगापे' प्रेम ऐसा प्रेम है जो उसकी सर्वश्रेष्ठ भलाई ही चाहता है चाहे उसे प्रेम के लिए कोई भी मूल्य देना पडे।

- अनन्त जीवन किसे प्रदान किया गया है, गोलाकार करें।

  📖 *" चोर केवल चोरी करने, मार डालने, और नाश करने को आता है। मैं इसलिए आया हूँ कि वे जीवन पाएं, और बहुतायत से पाएं।"* यूह 10:10

- रेखांकित करें, यूह 10:10 में येशू ने क्यों कहा कि वह आया है?
- गोलाकार करें कि वह हमसे किस प्रकार का जीवन चाहता है?

2 हमारे पाप ने हमें परमेश्वर से अलग किया है!

📖 *"इसलिए कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित है,"* रो 3:23

📖 *"क्योंकि पाप की मज़दूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु येशू मसीह में अनन्त जीवन है।"* रो 6:23

- गोलाकार करें कितने लोगों ने पाप किया है रो 3:23 के अनुसार
- रेखांकित करें, पाप का परिणाम, रो 6:23 के अनुसार।

3 येशू मसीह, परमेश्वर का पुत्र, हमारे पापों के लिए क्रूस पर मरा!

📖 *"येशू ने उस से कहा, "मार्ग, सत्य, और जीवन मैं ही हूँ। बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहूँच सकता।"* यूह 14:6

- गोलाकार करें उन तीन वस्तुओं को जो येशू ने अपने स्वयं पर का दावा किया है यूह14:6 में।
- गोलाकार करें, येशू के अतिरिक्त और कौन परमेश्वर के पास

आत्मिक मृत्यु

हमारे पाप का दण्ड मृत्यु है। यह मृत्यु केवल शारीरिक नहीं वरन् आत्मिक है। अतः परमेश्वर से जुदाई। हमारे शारीरिक मृत्यु पर यह दूरी सदा की हो जाती है।

यह दूरी पापमय मनुष्य और परमेश्वर के बीच में इतनी अधिक होती है कि चाहे हम जितने भी 'भले' हो हम इस दूरी को कम करने में असमर्थ हैं। ऐसा करना खुले समुद्र को पार करने के समान है। चाहे वह कितना ही अच्छा तैराक क्यों न हो, सबसे सर्वश्रेष्ठ तैराक भी पराजित हो जाएगा।

§ रो 3:10-20

कंठस्थ करो

- येशू का क्या तात्पर्य है जब वह दावा करता है कि वही 'मार्ग', 'सत्य', और 'जीवन' है?

§ प्रे 4:12 / 1ति 2:5
1यूह 5:11

- परमेश्वर ने हम से प्रेम किया हमारे उसके संबंध में जानने या सोचने के पहले ही, इसका क्या महत्त्व है?

जा सकता है।

📖 *"परन्तु परमेश्वर अपने प्रेम को हमारे प्रति इस प्रकार प्रदर्शित करता है कि जब हम पापी ही थे मसीह हमारे लिए मरा।* *रो 5:8*

- रो 5:8 में परमेश्वर ने हमारे प्रति अपना प्रेम किस प्रकार प्रदर्शित किया है, रेखांकित करें।
- गोलाकार करें, हम किस परिस्थिति में थे जब परमेश्वर ने हमसे प्रेम किया

📖 *"मैंने यह बात जो मुझ तक पहुंची थी उसे सब से मुख्य जानकर तुम तक भी पहुंचा दी, कि पवित्रशास्त्र के अनुसार मसीह हमारे पापों के लिए मरा, और गाड़ा गया, तथा पवित्रशास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा, तब वह कैफा को, और फिर बारहों को दिखाई दिया। जिनमें से अधिकांश अब तक जीवित हैं, पर कुछ सो गए। तब वह याकूब को दिखाई दिया, और फिर सब प्रेरितों को, और सब से अंत में मुझे भी दिखाई दिया, जो मानो अधूरे समय का जन्मा हूँ।"* *1कुर 15:3-8*

- उन चारों वस्तुओं के रेखांकित करें जो मसीह ने की 1कुर 15:3-8 के अनुसार
- गोलाकार करें, उन लोगों को जिनके सम्मुख मसीह साक्षात् प्रकट हुए अपने पुनरूत्थान के पश्चात।

4 हमें येशू मसीह को प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण करना है।

📖 *"परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर की सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास करते हैं।"* *यूह 1:12*

- गोलाकार करें उन दो वस्तुओं को जो हमें करनी चाहिए

येशू मसीह - परमेश्वर का वरदान

परमेश्वर ने अपने पुत्र को हमारे पापों के भुगतान के लिए दे दिया। जब मसीह क्रूस पर मरा तो उसकी मृत्यु ने हमारे पापों का दण्ड भोगा। इस कारण अनन्त जीवन केवल मसीह के द्वारा प्राप्त हो सकता है।

- 2कुर 5:15-21
- इफ 1:7/1पत 3:18
- रो 10:9-10

- ▶ आप कैसे जानते हैं कि मसीह का पुनरूत्थान हुआ?
- ▶ क्या आप सोचते है कि इतने सारे लोगों से भूल हुई होगी?

कंठस्थ करो

परमेश्वर की सन्तान बनने के लिए।

"क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है- और यह तुम्हारी ओर से नहीं वरन् परमेश्वर का दान है, यह कार्यों के कारण नहीं जिससे कि कोई घमण्ड करे।"
इफ 2:8-9

- गोलाकार करें, हम इफ 2:8-9 के अनुसार कैसे उद्धार प्राप्त करते हैं
- रेखांकित करें, परमेश्वर ने उद्धार क्यों विश्वास के द्वारा किया और न कि कार्य के द्वारा?

मसीह को ग्रहण करना

क्या आपने स्वयं येशू मसीह को अपना उद्धारकर्ता बनाया है, उस पर विश्वास किया है कि वह आपके पापें को क्षमा करेगा। यदि नहीं, तो क्या आप ऐसा चाहेंगे, और यदि नहीं तो क्यों नहीं? निम्नलिखित प्रार्थना को अभी करें ताकि आप यह महत्त्वपूर्ण निर्णय को **<u>इसी</u> समय** ले सकें।

"प्रिय प्रभु येशू, मैं यह स्वीकार करता हूँ कि मैंने आपके विरोध में पाप किया है और मुझे आपकी क्षमा की आवश्यकता है। धन्यवाद हो कि आप मेरे स्थान में मेरे पापें के लिए क्रूस पर मरे। मैं आपको अपने जीवन में ग्रहण करता हूँ और केवल आपको ही अपना उद्धारकर्ता और प्रभु होने में विश्वास करता हूँ। आपके के नाम से मैं यह प्रार्थना करता हूँ। आमीन।"

मसीह को ग्रहण करना
'मसीह को ग्रहण करो' के व्याख्यांश से येशू मसीह को प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में विश्वास करने की क्रिया को स्पष्ट करता है। और वह सब में विश्वास करना जो उसने क्रूस पर किया हमारे लिए क्षमा को मोल लेकर।

कंठ्स्थ करो

- आप के विचार में परमेश्वर ने क्यों अनन्त जीवन को हमारे विश्वास पर आधारित किया और न अपने कर्मों पर?

महत्त्वता:
इन शब्दों का महत्त्व नहीं वरन् आपका विश्वास है कि वह हमारे पापों को क्षमा करेगा क्योंकि उसने वचन दिया है।

अनन्त जीवन का आश्वासन

- निम्नलिखित बाईबल के पद को पढ़कर उसके नीचे के प्रश्नो का उत्तर दीजिए कि आप किस प्रकार से निश्चित है कि आपने अनन्त जीवन येशू मसीह में पाया है।

📖 *और साक्षी यह है, कि परमेश्वर ने हमें अनन्त-जीवन दिया है, और यह जीवन उसके पुत्र में है । वह जिसके पास पुत्र है उसके पास जीवन है; वह जिसके पास परमेश्वर का पुत्र नहीं है उसके पास जीवन नहीं है। मैंने ये बातें तुम्हें लिखी हैं जो परमेश्वर के पुत्र के नाम में विश्वास करते हो, ताकि तुम जानो कि तुम्हारे पास अनन्त जीवन है । 1यूह 5:11-13*

- गोलाकार करें प्रभु ने हमें 1यूह 5:11-13 के अनुसार क्या दिया है।
- रेखांकित करें, अनंत जीवन कहाँ पाया जाता है।
- गोलाकार करे एक व्यक्ति के पास क्या है यदि उसके पास येशू मसीह है।
- गोलाकार करें एक व्यक्ति के पास क्या नहीं है यदि उसके पास येशू मसीह नहीं है।
- इस पद के अनुसार, क्या एक व्यक्ति को निश्चित ही ज्ञात हो सकता है कि उसके पास अनन्त जीवन है?

  ❑ हां ❑ ना
- इस प्रश्न को पद में से उत्तर देकर उसे रेखांकित करें गोलाकार करे कौन यह 'जान' सकता है कि उनके पास अनन्त जीवन है।

  - क्या आपके जीवन में मसीह है?

  ❑ हां ❑ ना

यदि हां तो और क्या आपको परमेश्वर से प्राप्त हुआ है?

❑ एक उत्तम रूप और शरीर जो मेल खाता हो
❑ धन की वृद्धि
❑ अनन्त जीवन

➲ कंठस्थ करो

हमारे आश्वासन का आधार

अनंत जीवन हमारे अच्छे हाने पर या हम क्या सोचते है उस पर निर्भर नहीं होता। यह आपके विश्वास जो येशू मसीह में है उस पर अधारित है। ध्यान दें कि 1यूह 5:11-13 की सीख उनके प्रति लिखी गई थी जो कि *"परमेश्वर के पुत्र के नाम में विश्वास करते थे"*।

▸ 1यूह 5:14-15 और 1यूह 5:11-13 के शिक्षण के बीच में क्या संबंध है?

§ रो 1:16-17

उपयोगः

हम उसी प्रश्न पर समाप्त करेंगे जिससे हमने आरंभ किया था, "यदि आज आपकी मृत्यु हो तो आप अनन्तकालिक जीवन जीएंगे इस बात से आप कितने निश्चित हैं?"

"मैं पूर्णरूप से निश्चित हूं कि मेरे पास येशू मसीह, परमेश्वर के पुत्र के द्वारा अनन्त जीवन है।
यदि मैं आज मरा, तो मैं यह जानता हूं कि मैं परमेश्वर के साथ स्वर्ग में होऊँगा।"

------------ ---------------

दिनांक हस्ताक्षर

(यदि आप अब भी निश्चित नहीं कि आपके पास अनन्तत जीवन है तो फिर से 1यूह 5ः11-13 ऊपर पुनरावलोकन करे।
विचार विमर्श करें उपने पास्टर और अगुओं से किसी प्रश्न को लेकर।
यह अनिवार्य है कि आप इस पाठ को समझे क्योंकि यह एक नींव है दूसरे पाठों के लिए।

स्वीकरण

1 येशू क्रूस पर मेरे लिए मरा।
2 मेरी मृत्यु के पश्चात, परमेश्वर मुझे स्वर्ग में स्वीकार करेगा क्योंकि यह उसकी प्रतिज्ञा है।
3 मेरे पास अनन्त जीवन है क्योंकि मेरे पास येशू है।

प्रार्थना

पिता, मैं तेरी स्तुति करता हूँ क्योंकि तू ने मुझे अनन्त जीवन देने का वचन दिया जो तेरे पुत्र येशू मसीह पर विश्वास करने से प्राप्त होता है। और तेरा वचन निश्चित है क्योंकि तू झूट नहीं बोल सकता और न ही तेरा मन परिवर्तित होता है। तू विश्वसनीय है तेरे हर कार्य में, और मैं इस आश्वासन के लिए जो कि मसीह में है धन्यवाद देता हूँ। आमीन।

2 परमेश्वर की क्षमा

परिचय

निम्नलिखित पंक्तियो को आप किस प्रकार पूर्ण करेंगे?
जब एक व्यक्ति मसीही बन जाता है....

- ❑ केवल वही पाप क्षमा होते है जिन्हें वह स्वीकार करता हैं।
- ❑ अतीत के सब पाप क्षमा हो जाते है परन्तु भविष्य के नहीं।
- ❑ वह सिद्ध बन जाता है और कभी भी फिर से पाप नहीं कर सकता।
- ❑ हमारे सारे पाप भूत, वर्तमान और भविष्य काल के सारे पाप क्षमा हो जाते है।

एक समस्या जिसका हर मसीहियों को सामना करना पड़ता है वो है **पाप**। अगले दो पाठ में, हम इन ऊपर की पंक्तियों के सही उत्तर को जानेंगे और उस उपाय के संबंध में भी जो के परमेश्वर ने मसीही की सहायता के लिए दिया जिससे वह उपने जीवन में पाप को पराजित कर सके।

पाप से निपटना

यह अध्ययन उन चार प्रश्नो का उत्तर देगा जो हमें अपने जीवन में पाप से किस प्रकार निपटना है सिखाएगाः

1 **पाप क्या है?**
2 **पाप कौन करता है?**
3 **पाप के प्रति परमेश्वर का क्या उपाय है?**
4 **जब हम पाप करते है तो हमें क्या करना चाहिए?**

पाप "हमारथीया" (यूनानी)
- लक्ष्य से चूकना
- भूल करना
- गलती करना

1 पाप क्या है?

"पाप" एक यूनानी शब्द से उत्पन्न हुआ है जिसका अर्थ है "लक्ष्य

से चूकना” है। यह उस दूरी को स्पष्ट करती है जो कि तीर के और उचित लक्ष्य के बीच होता है। ध्यान दें निम्नलिखित बाइबल के पद में इसका किस प्रकार प्रयोग किया गया है।

> *“इसलिए कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा के स्तर से कम पड़े हैं।” रो 3:23*

कंठस्थ करो

▸ उस व्यक्ति के संबंध में सोचे जो सबसे सर्वश्रेष्ट है। क्या आप कहेंगे कि वह एक सिद्ध व्यक्ति है? क्यों हां या क्यों नहीं?

रो 3:23 पाप को स्पष्ट करता है, एक कमी “परमेश्वर की महिमा की कमी”। पाप मनुष्य की असफलता है, परमेश्वर के सिद्ध स्तर के अनुसार जीने के लिए। हम सभी ने परमेश्वर के सिद्ध नैतिक स्तर का उल्लन्घन किया है, अपने विचारों या कर्मों के द्वारा। हमारी असफलता, उस कार्य को उचित रूप से करना जो हम जानते है कि उचित है, वह भी पाप है। इसलिए हमारे बीच ऐसा कोई नहीं जो कि निर्दोष या सिद्ध हो।

याक 2:10
याक 4:17

पाप के परिणाम

> *जो कोई पाप करता है वही मरेगा। यहेज 18:20*

- उस शब्द को गोलाकार करें जो कि पाप के परिणाम को स्पष्ट करता है।

क्या आप यह विश्वास करते है कि वे व्यक्ति जो नैतिक स्तर का उल्लन्घन करने पर दोषी पाए जाते है उन्हें दंडित होना चाहिए? परमेश्वर भी! पाप परमेश्वर का मृत्युदण्ड उन पर लाता है जो कि परमेश्वर के सिद्ध नैतिक व्यवस्था को तोड़ने में दोषी पाए जाते हैं।

2 कौन पाप करता है?

- गोलाकार करें रो 3:23 (पिछले पृष्ठ) में शब्द को, जो स्पष्ट करता है परमेश्वर किसको पापी ठहरता है?

📖 *यदि हम कहें कि हम में पाप नहीं है, तो हम अपने आपको धोखा देते हैं और हम में सत्य नहीं है। यदि हम कहें कि हमने पाप नहीं किया, तो हम उस को (परमेश्वर को) झूठा ठहराते है, और उसका वचन हम में नहीं है।*
1 यूह 1:8,10

- रेखांकित करें किस प्रकार से *1यूह 1:8,10* मसीहियो को दर्शाता है जो दावा करते है कि उनमे पाप नहीं या उन्होने कभी पाप नही किया है ।

3 पाप के प्रति परमेश्वर का क्या उपाय है ?

- पाप के प्रति **परमेश्वर के उपाय** को बाइबल के इन नीचे लिखे गए पदों को पढ़ें

📖 *"जब तुम अपने अपराधों और शरीर की ख़तना-रहित दशा में मृतक थे, तब उसने मसीह के साथ तुम्हें भी जीवित किया। उसने हमारे सब अपराधों को क्षमा किया और विधियों का वह अभिलेख जो हमारे नाम पर और हमारे विरुद्ध था, मिटा डाला, और उसे क्रूस पर कीलों से जड़ कर हमारे सामने से हटा दिया।" कुल २:१३-१४*

📖 *"जब येशू ने वह सिरका लिया, जो कहा, "पूरा हुआ," और उसने सिर झुकाकर प्राण त्याग दिया। यूह 19:30*

📖 *"जो पाप से अनजान था, उसी को उसने हमारे लिए पाप ठहराया कि हम उसमें परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं।" 2कुर 5:21*

कुल 2:13-14 में, प्रेरित पौलुस ने एक न्यायलय के उदाहरण का प्रयोग किया है। उनके समय में, दोषित अपराधी को एक "लिखित सूची" लागू होती थी जिस पर उनके सारे अपराध एवं न्यायालय से घोषित किए दंड लिखे जाते थे। पूर्ण रूप से दंड भुगतने के बाद

§ नीत 20:9
§ सभ 7:20
§ यश 53:6
§ यश 64:6

▸ क्या परमेश्वर हमें क्षमा कर सकता था बिना अपने पुत्र का क्रूस पर बलिदान देकर? क्यो हां या क्यों नहीं?

येशू मसीह की मृत्यु परमेश्वर के दो गुणों को पूरा करता है। वह उसकी पवित्रता को पूरा करता है जो कि पाप को दंडित करने की आवश्यकता थी और उसके प्रेम को पूरा करता है जो कि मनुष्य का उद्धार था। येशू के बलिदान द्वारा। परमेश्वर योग्य है अपने प्रेम को मनुष्य के प्रति दर्शाने के लिए अपनी पवित्रता को कायम रखते हुए!

कंठस्थ करो

लिखित सूची पर **"पूर्ण रुप से भुगतान"** छाप लगा देते थे। येशू ने भी इन्ही शब्दों का यूह 19:30 में प्रयोग किया जब उसने कहा, "पूरा हुआ", क्रूस पर मरने से पहले।

- गोलाकार करें हमारे कितने पापों को परमेश्वर ने क्षमा किया कुल 2:13-14 के अनुसार।
- रेखांकित करें परमेश्वर ने क्या किया उस "लिखित सूची" के साथ जिस पर हमारे पाप और मृत्यु दंड लिखे थे।

"क्रूस पर कीलों से जड़ते हुए", परमेश्वर ने अपने पुत्र **येशू** को हमारे पापों के लिए हमारे स्थान पर मृत्यु के द्वारा भुगतान करने दिया। यदि येशू हमारे पापों का भुगतान नहीं करता तो हमें मरना पड़ता।

- गोलाकार करें वाक्य को **"पूरा हुआ"** यूह 19:30 में, उसके उपर "पूर्ण रुप से भुगतान" लिखें।
- रेखांकित करें कि परमेश्वर ने ऐसा क्यों किया 2कुर 5:21 के अनुसार।

4 हमें क्या करना चाहिए जब हम पाप करते है ?

> 🕮 *यदि हम अपने पापों को मान लें तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में वह विश्वासयोग्य और धर्मी है। 1 यूह 1:9*

1यूह 1:9 **"मसीहियों की साबुन की टिकिया"** कहलाता है। क्योंकि उसमें हमारे जीवन में पापों से निपटने के लिए कुंजी पायी जाती है। यह पद हमारी क्रिया को स्पष्ट करता है जब हम पाप करते हैं।

- गोलाकार करें उस शब्द को जो इस क्रिया को स्पष्ट करता है।

येशू के क्रूस पर मृत्यु जो कि एक प्रतिनिधिक प्रायश्चित्त के समान है क्योंकि वह हमारे स्थान पर हमारे पापों को अपने ऊपर लेकर दंडित हुआ ।

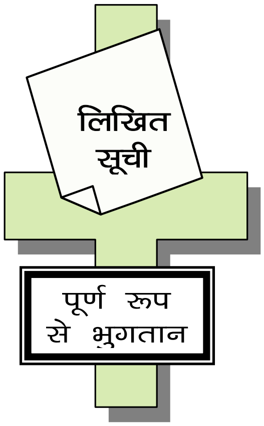

कंठस्थ करो

भज 32:5

स्वीकार करना - होमोलोगीओ (यूनानी)
होमो - वहीं
लोगो - बोलो
वहीं बोलो - सहमती

“स्वीकार” शब्द यूनानी शब्द से आया है जिसका तात्पर्य है “सहमत होना”। स्वीकार करने का अर्थ परमेश्वर के साथ सहमत होना है कि हमने पाप किया है। ध्यान दे, उपरी पद एक शर्तबन्द वाक्य है। यदि हम अपने पापों को स्वीकार करते है, परमेश्वर हमारे लिए दो कार्य करेगा।

- गोलाकार करें उन दो कार्यो को।

उपयोग

1 परमेश्वर से प्रार्थना करो कि वह आपको उन पापों को दर्शाए जिन्हें आपने स्वीकारा नही है।

2 परमेश्वर के सामने उन्हे स्वीकारो, सहमत होकर कि आपने पाप किया है। अपने पापों के लिए कोई भी बहाना न बनाओ।

3 पापों से फिरो और परमेश्वर से मांगो कि वह आपकी सहायता करें कि आप फिर से उस पाप को न करें।

4 उन दो प्रतिज्ञाओं का दावा करो जो परमेश्वर देता है उनको जो अपने पापों को स्वीकारते है 1यूह 1:9 के अनुसार।

5 अपने विश्वास को अभिव्यक्त करते हुए, परमेश्वर की क्षमादान के लिए धन्यावाद दे।

6 स्मरण करें 1यूह 1:9 को।

- परमेश्वर क्यों चाहता है कि अपने पापों को स्वीकार करें जिससे हमारे पापों को क्षमा मिले?
- यह क्यों अनिवार्य है कि हम “पापों से मुँह फेर ले” न केवल उन्हें स्वीकार करें?

अधिक शुभ समाचार

📖 *“वह आगे कहता है,“मैं उनके पापों और उनके अधर्म के कामों को फिर स्मरण न करूंगा।”* इब्रा 10:17

📖 *“उदयाचल से अस्ताचल जितनी दूर है, उसने हमारे अपराधों को हमसे उतनी ही दूर कर दिया है।”* भज 103:12

📖 *“यहोवा कहता है,“आओ, हम आपस में वाद-विवाद*

इन तीन बाइबल के पद ने हमारे क्षमा को तीन विभिन्न प्रकार से दर्शित किया है।

- यह जानते हुए कि परमेश्वर सब जानता है, आप क्या सोचते है जब कहा जाता है कि, “वह हमारे पापों को कभी स्मरण नहीं करेगा?” इब्रा 10:17
- उदयाचल से अस्ताचल कि

करें, तुम्हारे पाप चाहे लाल रंग के हों, तोभी वे हिम के समान श्वेत हो जाएंगे; चाहे वे किरमिजी लाल ही क्यों न हों, वे ऊन के समान उजले हो जाएंगे। यश 1:18

प्रश्न और उत्तर

प्रः क्या मेरे सभी पाप क्षमा किए गए है या केवल भूतकाल के?

उः मसीह हमारे सारे पापों के लिए मरा – भूत, वर्तमान, और भविष्य के लिए।

प्रः यदि परमेश्वर ने मेरे पापों को क्षमा कर ही दिया है तो मुझे उन्हें उनको स्वीकारना क्यों है?

उः स्वीकृति हमें उस क्षमादान का अनुभव दिलाता है जो कि येशू में पहले से है। पाप हमारी परमेश्वर से सहभागिता को तोड़ देता है, न कि रिश्ते को। परमेश्वर के साथ हमारा रिश्ता, उसके बच्चों के समान उसके बिलाशर्त प्रेम पर अधारित है। परन्तु हमारी सहभागिता उसके साथ की गई घनिष्ठ चाल पर निर्भर है। जहां पाप इस घनिष्ठता को नष्ट करता है वहां स्वीकृति इसका पुनःस्थापित करता है।

प्र फिर भी यदि मैं अपने आपको दोषी पाऊँ, स्वीकृति के उपरान्त भी तो क्या?

उ कोई भी दोष असली स्वीकृति के उपरान्त परमेश्वर से नहीं है। शैतान हम पर दोषारोपण करने वाला, आनंदित होता है हमे इन दोष पूर्ण यात्रा में ले जाने के लिए।

प्र मै अपने पापों को क्यों स्वीकार करुँ?

उ हमारे पापों की नियमित स्वीकृति हमारी परमेश्वर के साथ सहभागिता को खुला और ताज़ा रखती है। यह परमेश्वर के आत्मा के प्रति हमारे हृदय को संवेदनशील रखती है। लगातार पाप करना परमेश्वर के प्रति हृदय को कठोर बना

दूरी कितनी है? भज 103:12

- हिम कितना श्वेत है? यश 1:18
- इन पदों से हमें प्राप्त क्षमा कितनी परिपूर्ण है येशू में?
- इनमे से एक या दो पद को स्मरण करे।

§ इब्रा 10:8-18

§ अय 1:1.11
§ ज़क 3:1
§ प्रक 12:9-10

§ भज 66:18

देता है।

प्र क्षतिपूर्ति करने के संबंध में क्या?

उ यदि आपके पाप ने दूसरो को दुख पहुँचाया है तो आपको उनसे क्षमा माँगनी चाहिए और आवश्यक हो तो क्षतिपूर्ति करनी चाहिए।

प्र कितनी बार हमे अपने पापों को स्वीकारना चाहिए?

उ जैसे कि बताया गया 1यूह 1:9 "मसीहियों की साबुन की टिकिया" है। जिस प्रकार से आप अपने आपको साबुन से धोते है जितनी बार आवश्यक हो उतनी ही बार हमें स्वीकृती करनी है। अपने पापों को शीघ्र ही स्वीकार करे, जब परमेश्वर उन्हें स्पष्ट करता है। किसी भी प्रकार की देर शैतान को अवसर देती है हमारे जीवन में पाँव जमाने के लिए।

§ मत्ती 5:23-24

§ इफ 4:26-27

3 परमेश्वर की शक्ति

परिचय

इस वाक्य को आप कैसे संपूर्ण करेंगे? सबसे महत्त्व उद्देश्य मसीही जीवन में है . .

- ❑ अपने मन तथा हृदय को वचन से भरे
- ❑ जितना प्रार्थना कर सके करें
- ❑ प्रेरणा पाने के लिए मसीही सभा में जाए
- ❑ मसीही सेवा में शामिल हो जाएं
- ❑ जो सही है वो करें
- ❑ ऊपर से कोई भी नहीं

ऊपर लिखित हर सुझाव मसीही जीवन जीने के लिए आवश्यक हैं, परन्तु इसमें से कोई भी "अत्याधिक अनिवार्य" नहीं साबित उतरता क्यों कि वे सब असफल है उस मुख्य बाधा से निपटने के लिए जो हर मसीही को पराजित करना होता है। यह बाधा न की मसीही जीवन को जीने में कठिन कर देता है पर असम्भव बना देता है! इस पाठ में हम परमेश्वर के उपाय के संबंध में पढ़ेंगे इस बाधा को पराजित करने के लिए।

हम मसीही जीवन क्यों नहीं जी सकते

सबसे **प्रथम बाधा** जो हमें मसीही जीवन जीने में रुकावट लाती है वो है हमारा **पापी स्वभाव**। सामान्य विश्वास यह है कि हम निश्पाप जन्मे हैं। इसके विपरीत, धर्मशास्त्र सीखाती है कि हम पापी बनते नहीं, वरन् हम जन्म से ही पापी है। निम्नलिखित पद को ध्यान दे जो राजा दाउद ने लिखा, जिसके संबंध में परमेश्वर ने

"एक मनुष्य जो मेरे हृदय के अनुसार है" वर्णन किया।

> 🕮 *देख, मैं अधर्म के साथ उत्पन्न हुआ, और पाप के साथ अपनी माता के गर्भ में पड़ा। भज 51:5*

हम एक गम्भीर त्रुटि सहित अपनी माता के गर्भ मे धारण हुए। इसलिए पाप करना हमारा स्वभाव का अंग है!

- पढ़े निम्नलिखित वचनों को जो के उस समस्या को स्पष्ट करती है।

> 🕮 *जैसा कि लिखा है, "कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं। कोई समझदार नहीं। कोई भी नहीं जो परमेश्वर को खोजता है। सब भटक गए, वे सब ही निकम्मे बन गए हैं; कोई भलाई करने वाला नहीं, एक भी नहीं। रो 3:10-12*

> 🕮 *(येशू ने कहा) "क्योंकि भीतर से अर्थात् मनुष्यों के मन से कुविचार, व्यभिचार, चोरी, हत्या, परस्त्रीगमन, लोभ और दुष्टता के काम मथा छल, कामुकता, ईर्ष्या, निन्दा, अहंकार और मूर्खता निकलती है। ये सब बुराईयां भीतर से निकलती हैं और मनुष्य को अशुद्ध करती हैं।" मर 7:21-23*

> 🕮 *"क्योंकि शारीरिक मन तो परमेश्वर से शत्रुता करता है। वह न तो परमेश्वर की व्यवस्था के अधीन है और न ही हो सकता है। जो शारीरिक हैं, वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते। रो 8:7-8*

इस **पापमय चरित्र** के कारण, चाहे हम कितने भी वचनो को जाने, या कितने भी प्रार्थना करें, या कितने भी बार उत्साहित भरे सभाओं मे सम्मेलत हों, या सेविकाई में शामिल हों, या जितने भी हम बलवान बने सही कार्य करने में, हमारा उत्तम प्रयत्न असफल हो जाएगा क्योंकि वे प्रमुख समस्या के साथ नहीं निपट सकते! स्वयं के शक्ति पर निर्भर होते हुए यह क्रिया **आत्मिक घमंड** को

▸ यदि आप जन्म से ही पापमय है, तो आप क्या सोचते है कि यह पाप कहाँ से आता है?

- भज 58:3
- अय 15:14
- रो 5:12

▸ यदि कोई परमेश्वर की खोज नहीं करता तो अन्त में हम उसे कैसे ढूंढ़ पाएंगे?

- यूह 6:65
- मत्ती 11:27
- मत्ती 16:17

उत्पन्न करती है। परन्तु परमेश्वर ने हमे इसका सुझाव दिया है।

परमेश्वर का सुझाव

परमेश्वर का सुझाव हमारे **पापी चरित्र** को एक **नया चरित्र** देता है। उसने उपने पवित्र आत्मा को हममें दिया उस क्षण में जब हमने येशू मसीह को ग्रहण किया!

- **निम्नलिखित वचन को पढ़े जो कि इस चमत्कार को स्पष्ट करती है।**

📖 *"येशू ने उत्तर दिया, "मैं तुझ से सच सच कहता हूँ कि जब तक कोई जल और आत्मा से न जन्मे, वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। जो शरीर से जन्मा है वह शरीर है, और जो आत्मा से जन्मा है वह आत्मा है। आश्चर्य न कर कि मैंने तुझ से कहा, "अवश्य है कि तू नया जन्म ले।"* *यूह 3:5-7*

📖 *"इसलिए यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है। पुरानी बातें बीत गईं। देखो, नई बातें आ गई हैं।"*
2कुर 5:17

📖 *"और अपने मन के आत्मिक स्वभाव में नए बनते जाओ, और नए मनुष्यत्व को पहिन लो जो परमेश्वर के अनुरूप सत्य की धार्मिता और पवित्रता में सृजा गया है।"*
इफ 4:23-24

- **गोलाकार करें इस उपर लिखे पन्त में उन शब्दों को जो के हमारे नए स्वभाव को बतलाता है। परमेश्वर का पवित्रात्मा उसका स्वभाव और सामर्थ हमें देता है।**

📖 *"और फिर मैं तुम्हें एक नया हृदय दूंगा और तुम्हारे भीतर एक नई आत्मा उत्पन्न करूंगा और तुम्हारे देह में से पत्थर का हृदय निकालकर तुम्हें मांस का हृदय दूंगा। और*

अनेक घर्म बनाम मसीह में विश्वास

अनेक धर्म हमें बताती है कि हमें एक प्रकार के आत्मिक नियमों के स्तर के अनुसार चलना चाहिए जिससे हम सिद्धता प्राप्त कर सके। मसीह सिखाता है कि मनुष्य असमर्थ है अपने आपको परिवर्तित करने में। उसे आवश्यक है एक पूर्ण नए जीवन की।

▶ बाएं ओर में ऐसे कौन से शब्द इन सभी बाइबल के पदों से इस बात को स्पष्ट करती है।

✎ कुल 3:10

▶ इस वाक्य का क्या महत्त्व है- "पत्थर का हृदय" और "मांस का हृदय"?

तुम्हें अपनी विधियों पर चलाऊंगा और तुम मेरे नियमों का सावधानी से पालन करोगे।" यहेज 36:26-27

📖 *"परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे, और यरूशलेम, सारे यहूदिया और सामरिया में, यहां तक कि पृथ्वी के छोर तक तुम मेरे साक्षी होगे।"* प्रे 1:8

- गोलाकार करें उन तीन वस्तुओं को जो के परमेश्वर हमें यहेज 36:26-27 में देता है।
- रेखाकित करें उन दो वस्तुओं को जो के परिणाम है जब परमेश्वर का पवित्रात्मा हम पर आता है प्रे 1:8 में।
- (इस वचन में "सामर्थ्य" शब्द का अर्थ है "किसी कार्य को करने की क्षमता")
- परमेश्वर का पवित्रात्मा हमें अभिलाषा (यहेज 36:26-27) और शक्ति (प्रे 1:8) देता है उसके इच्छा को पूरी करने में!
- फिलि 2:13 को नीचे पढे

📖 *"वह परमेश्वर ही है, जिस ने अपनी सुइच्छा के कारण तुम्हारे मन में इच्छा और काम, दोनों बातों के करने का प्रभाव डाला है।"* फिलि 2:13

परमेश्वर का हम में आत्मा
परमेश्वर को प्रसन्न करने की इच्छा, आपके हृदय में पवित्रात्मा का कार्य है। यह एक प्रमाण है उस नए स्वभाव का जो कि आप ने पाया है जब आपने परमेश्वर के आत्मा से नया जन्म लिया।

कंठस्थ करो

परमेश्वर के सुझाव का उपयोग

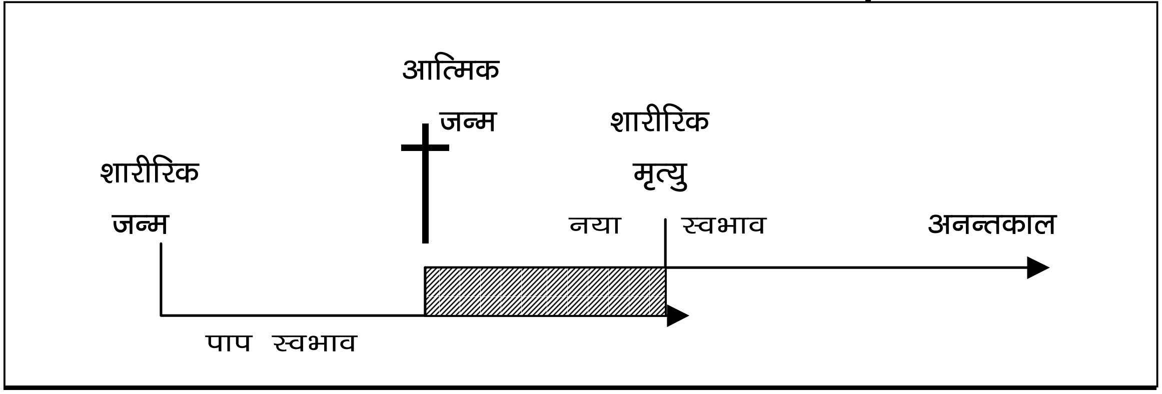

ऊपर का चित्र हमारे मसीही जीवन की स्थिति को दर्शाति है। हम इस संसार में **पापी स्वभाव** सहित पैदा हुए है। परन्तु जिस क्षण से हम येशू मसीह पर विश्वास करते है हम नया जन्म लेते है एक नए स्वभाव के साथ हमारा **पापी स्वभाव**, जिसके साथ हम जन्मे है कभी भी परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकता न ही वह चाहता है। परन्तु हमारा **नया स्वभाव** परमेश्वर को प्रसन्न करने को अभीलाषा करता है और पवित्रात्मा के सामर्थ्य के द्वारा कर भी पाता है।
ध्यान दे कि मसीही के **पापी स्वभाव** का मृत्यु के क्षण पर अन्त होगा।

§ रो 7:22
§ फिलि 2:13

यह दो स्वभाव विरोघी है। वह हमारा मन, हृदय, और शरीर में राज्य करने के लिए संघर्ष करते है। हमे निर्णय लेना चाहिए कौन सा स्वभाव हमारा जीवन में राज्य करेगा।
शुभ समाचार यह है कि यह तनाव अस्थायी है (छायाकरण रेखाचित्र में)! जैसे ही हम इस इस **पापी स्वभाव** से छुट्कारा पाते है, हमारे **नए स्वभाव** को कोई बाधा नहीं आएगा वह सब करने में जो परमेश्वर की इच्छा हो!
यह अनिवार्य है कि हम यह समझे कि विजय की कुंजी परमेश्वर

§ गल 5:16-17

▸ क्या आप उन समयों को स्मरण कर सकते है जब आपके जीवन में नए स्वभाव और पापी स्वभाव के बीच युद्ध हुआ है?

का पवित्रात्मा है जो के हम में है। हम परमेश्वर की इच्छा और उसकी शक्ति का अनुभव कर सकते है केवल उसके आत्मा को समर्पण करने से जो हमारे भीतर रहता है। (देखो पृष्ठ 18 उपर्युक्त फिलि 2:13)

- अध्ययन करें निम्नलिखित इफ 5:18

पवित्रात्मा से परिपूर्ण होते जाओ

> 🕮 *दाखरस पीकर मतवाले न बनो, क्योंकि इस से लुचपन होता है, परन्तु आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ।*
>
> *इफ 5:18*

कंठस्थ करो

▸ मतवाले होने में और आत्मा में परिपूण होने में क्या संबंध है?

इफ 5:18 हमें सिखाता कि हम परमेश्वर के सुझाव का कैसे उपयोग करे, पाप को पराजित करने में।

- गोलाकर करें हमें आत्मा से क्या करना चाहिए।

"परिपूर्ण होना" का अर्थ है पूर्ण रूप से भर जाना! जो व्यक्ति "आत्मा से भरा" है, वह पापमय स्वभाव के लिए अपने जीवन को नियन्त्रण करने में कोई जगह नहीं छोड़ता! "परिपूर्ण होना" क्रिया का गुण हमें सहायता देता है उसे समझने में और उसका उपयोग करने में।

आदेशः "पवित्रात्मा से परिपूर्ण होओ" एक आदेश है परमेश्वर का। परमेश्वर हमसे नहीं कहता कि यदि हम चाहे तो हम उसका पवित्रातमा से परिपूर्ण हो। चाहे हम कैसा भी अनुभव करते हो, चाहे जैसी भी परिस्थिति हो, हम परिपूर्ण होने का चुनाव कर सकते है और परमेश्वर को हमारे जीवन पर राज्य करने की अनुमति दे सकते है।

परमेश्वर का कार्यः इस क्रिया से यह संकेत होता है कि परमेश्वर हमें परिपूर्ण करते है। हमें मात्र उसके सामने समर्पित होना है! जिस प्रकार से हम अपने आपको परमेश्वर को समर्पण करते है उसका पवित्रात्मा हमें उसकी इच्छा पूरी करने में और योग्यता से उत्तेजित कर देता है।

वरतमान कालः अन्त में यह क्रिया हमें आदेश देता है कि हम निरन्तर पवित्रात्मा से परिपूर्ण हो जाएं। कोई भी अनुमति न देते हुए उस पापमय स्वभाव को हम पर राज्य करने के लिए।

हम किस प्रकार से निश्चित हो सकते है कि परमेश्वर हमे अपनी आत्मा से भरेगा ?

§ तीत 1:2

क्यो कि उसने कहा है और वह झूठ नहीं बोलता !

- उसकी प्रतिज्ञा 1यूह 5:14-15 में पढ़े।

📖 *और जो साहस हमें उसके सम्मुख होता है वह यह है; कि यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार कुछ मांगें, तो वह हमारी सुनता है। यदि हम जानते हैं कि जो कुछ हम उस से मांगते हैं वह हमारी सुनता है, तो यह भी जानते हैं कि जो कुछ हमने उस से मांगा वह हमें प्राप्त हो चुका है।*

1 यूह 5:14-15

- गोलाकार करें कि हमें किस आचरण के साथ परमेश्वर के सम्मुख आना चाहिए।
- रेखांकित करें परमेश्वर किस प्रकार की मांग को सुनता है।
- रेखांकित करें उस परिणाम को, जब परमेश्वर हमारी प्रार्थना को स्वीकार करता है।

1 क्या यह परमेश्वर की इच्छा है कि हम उसकी पवित्रात्मा से परिपूर्ण हो जाए? ❑ हाँ ❑ ना

2 यदि हम परमेश्वर से मांगे कि वह उपने पवित्रात्मा से हमें भर दें, तो क्या वह हमें सुनेगा? ❑ हाँ ❑ ना

3 यदि हम जानते है कि परमेश्वर हमे सुनेगा, क्या हम निश्चित हो सकते है कि हम पवित्रात्मा से परिपूर्ण हो जाएगे? ❑ हाँ ❑ ना

उपयोग

निम्नलिखित क़दम लेने से हम परमेश्वर की शक्ति का निरन्तर अनुभव कर सकते हैः

1 **स्वीकृति** – परमेश्वर का पवित्रात्मा से परिपूर्ण न होना पाप है। इसे स्वीकार करें और परमेश्वर से क्षमा मांगे (1यूह 1:9)

कंठस्थ करो

परमेश्वर की इच्छा के लिए प्रार्थना

जब हम प्रार्थना करते है किसी भी विषय को लेकर जो परमेश्वर की इच्छा के अनुसार है, हम 1यूह 5:14-15 का उपयोग कर सकते है। हम साहस रख सकते है कि परमेश्वर हमारे प्रार्थना का उत्तर देगा क्योंकि यह उसका वचन है।

2 **पवित्रात्मा से परिपूर्ण हो जाओ** – परमेश्वर से माँग करें कि वो अपना पवित्रात्मा से आपको भर दें। उसे अपने मन में, हृदय में और शरीर में राज्य करने दे।!

प्रार्थना

प्रिय परमेश्वर, मुझे क्षमा करे कि मैने पाप को अपने जीवन पर राज्य करने दिया। मैं अब अपने हृदय को, मन को और शरीर को तुझमें लीन करता हूँ, तू मुझे तेरे पवित्रात्मा से भर दे। मैं चाहता हूँ कि तू मेरे जीवन में राज्य करें। धन्यवाद प्रभु, कि तूने मेरी प्रार्थना सुनी और उसे स्वीकार किया। येशू के नाम में, आमीन।

4. सहभागिता

परिचय

एक बच्चे का जन्म हुआ। दस वर्ष बाद भी वह वही आकार में और उतना ही अपरिपक्व है जितना जन्म लेते समय था! आपकी तुरन्त प्रतिक्रिया हैः

- ❑ "वाह, अब भी वह उतना ही मनोहर है!"
- ❑ "ओह... शायद कुछ बच्चे दूसरों से अधिक समय लेते हैं बढ़ने में।"
- ❑ "इस बच्चे को डॉक्टर के पास ले जाओ... तुरन्त!"

बच्चा प्रसम नहीं है यह जानने के लिए डॉक्टर की आवश्यकता नहीं पडती। प्रसम बच्चे बढ़ते और परिपक्व होते हैं, और यदि ऐसा न हो तो अप्रसम है।

जब परमेश्वर ने अपने पवित्रात्मा को आप में डाला उसी क्षण जब आपने येशू पर विश्वास किया क्षमादान के लिए, आप ने आत्मिक रूप में *"नया जन्म"* प्राप्त किया। तुरन्त, आप परमेश्वर के अनन्त परिवार के एक सदस्य और येशू में एक *"नई सृष्टी"* बन गएं, जिसका निर्माण परिपक्वता की और बढ़ने और अपने जीवन के द्वारा येशू को महिमा देना है।

§ 1पत 1:23
§ यूह 1:12
§ 2कुर 5:17
§ 2कुर 6:18
§ 1पत 2:2

- 2पत 3:18 को पढ़ें :

> 🕮 *"परन्तु हमारे उद्धारकर्ता प्रभु येशू मसीह के अनुग्रह और ज्ञान में बढ़ते जाओ। उसकी महिमा अब भी हो और युगानुयुग होती रहे। आमीन।" 2पत 3:18*

आगे के चार पाठ आपको उन तथ्यों के बारे में सिखाएंगे जो आपके जीवनशैली को स्थापित करने की सहायता करेगी जिससे आपके मसीही जीवन में आत्मिक प्रगति होगी। संसार में प्रगति

समय लेती है और आत्मिक परिपक्वता के लिए धीरज होना आवश्यक है। यदि आप अपने जीवन को अनुशासित करते हैं और इन सिद्धान्तो का उपयोग करते हैं, तो आपकी आत्मिक प्रगति निश्चित ही होगी।

"संख्या में शक्ति!"

दूसरे बढ़ते मसीहियों के साथ शक्तिशाली संबंध स्थापित करना आत्मिक प्रगति का पहला तथ्य है।

येशू के लिए अग्निज्वलित!

जिस प्रकार से कोयले का ढ़ेर अधिक देर तक गरम तथा जलता रहता है, इसी प्रकार से मसीही लोग आत्मिक सहभागिता में जुडकर एक दूसरे को परमेश्वर के विश्वास को गर्म करेगे, और एक दूसरे को परमेश्वर के प्रति प्रेम में प्रज्वलित करेगे। हमें मसीही सहभागिता में क्यों जुड़ना चाहिए इसके निम्नलिखित तीन कारण हैं:

1 प्रोत्साहन

> *"और एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ो, जैसा कि कितनों की रीति है, वरन् एक दूसरे को प्रोत्साहित करते रहो, और उस दिन को निकट आते देख कर और भी आधिक इन बातों को किया करो।"* *इब्रा 10:25*

- रेखांकित करे कि हमें क्या नहीं करना चाहिए इब्रा 10:25 के अनुसार
- गोलाकार करे शब्द *"छोड़ो"* इस शब्द का अर्थ *"पूर्ण रूप से छोड़ना"* या *"एकदम त्यागना"* है। मसीहियों को सहभागिता निरन्तर रखनी चाहिए।
- रेखांकित करे हमें क्या करना चाहिए।
- गोलाकार करे शब्द *"प्रोत्साहन"* को। यह शब्द यूनानी शब्द से

कंठस्थ करो

"कभी हार न मानो"
सर विन्सटन चर्चिल

दूसरे विश्व युद्ध के अन्त के कुछ ही समय बाद, सर विन्सटन चर्चिल जो उस युद्ध के दौरान इंगलन्ड के प्रधानमंत्री थे, एक सभा में भाषण देने के लिए अमंत्रित किए गए थे। वे अपने ज्ञान और बुद्धि के लिए सुनामी थे। सभा उत्सुक और अपेक्षा कर रही थी उनके बुद्धि से भरे शब्दों को सुनने के लिए। वे पूर्ण ध्यान देकर बैठे थे जैसे महान व्यक्ता मंच की ओर आए, और ढोल बजते स्वर में कहा, *"कभी हार*

लिया गया है जिसका अर्थ है *"साथ लेकर चलना",* और एक सुन्दर चित्र को प्रस्तुत करता है जहां एक व्यक्ति दूसरे को साथ साथ चलने में प्रोत्साहित करता है। कई बार हम सहज रीति से किसी की आलोचना या लज्जा, या न्याय करते हैं जो हमारे स्तर पर पूरा नहीं उतरता, परन्तु परमेश्वर हम से कहता है कि हम उन्हें प्रोत्साहित करे, और उनके साथ में खडे रहें जो स्थिर नहीं है।

2. प्रेरणा

📖 *"धोखा न खाओः 'बुरी संगति अच्छे चरित्र को भ्रष्ट कर देती है।'" 1कुर 15:33*

- गोलाकार करे उस शब्द को जो स्पष्ट करता है कि हमें क्या नहीं होना है (1कुर 15:33)। *"धोखा"* का अर्थ है सत्य से भटक जाना। हम यह आग्रह बाइबल में हर जगह पाते हैं, शायद इसलिए क्योंकि हममें यह सोचने की आदत है कि हम मार्ग को जानते है, यद्यपि परमेश्वर ने हमें सही मार्ग बताया है।
- गोलाकार करे उस शब्द को जो स्पष्ट करता है *"बुरी संगति"* का प्रभाव *"अच्छे चरित्र"* पर
  "भ्रष्ठ" शब्द का अर्थ है नष्ट या दूषित करना है।

क्या कभी आप ऐसे व्यक्ति से मिले हैं जो सोचते हैं कि वे दूसरे पाप में पड़े लोगों की सहायता कर सकते हैं, परन्तु वे स्वयं पाप में गिर पड़े हैं? जीवन में ऐसे अनेक मसीहियों के उदाहरण हैं जिन्होंने बुरी संगति में रहना चुना और बाद में पाया कि उनका विश्वास भ्रष्ट हो गया है।

"धोखा न खाओ"! हम वैसे ही बनेंगे जैसे संगति हम रखते हैं! यदि हमारा लक्ष्य आत्मिक परिपक्व मसीह बनने का है, तो

न मानो", "कभी हार न मानो", "कभी हार न मानो",---!" केवल इतना ही कहकर वे अपनी स्थान में स्तंभित सभा के सामने बैठ गए।

कंठस्थ करो

- मत्ती 24:4
- नीत 13:20
- 2पत 2:17-22

- किस प्रकार से बुरी संगति अच्छे चरित्र को भ्रष्ट करती है?
- किस प्रकार से अच्छी संगति अच्छे चरित्र को प्रेरित कर सकती है?

फिर हमें अन्य मसीहियों के साथ समय बीताना चाहिए जो आत्मिक रूप में परिपक्वता की ओर बढ़ रहे हैं!

3. पुनःस्थापना

📖 *"हे भाईयों, यदि कोई मनुष्य किसी अपराध में पकड़ा भी जाए तो तुम जो आत्मिक हो सौम्यता से उसे पुनःस्थापित करो," गला 6:1*

- गोलाकार करे एक असर्तक मसीही को क्या हो सकता है (गल 6:1)। "पकड़ा" शब्द का अर्थ है आश्चर्य से फंस जाना।

'आप संकट में हैं और किसी को भी सहायता के लिए बुलाने में असमर्थ है', क्या ऐसी स्थिति से आप गुज़रे हैं। इससे अधिक नैराश्य और भयानक कुछ नहीं हो सकता! जैसा कोई समुद्र के भंवर में फंस जाता है, वैसा ही मसीही व्यक्ति भी पाप के प्रलोभन में बह सकता है। भाग्यशाली है वह मसीही जिसका आत्मिक मित्र उसको खतरे से बचाने के लिए बिना किसी संकोच के कूद जाता है!

- रेखांकित करे *"आत्मिक"* मसीहियों (जो पवित्रात्मा से भरे है) को अपने भाई मसीहियों के लिए जो पाप में पकड़े गए है क्या करना चाहिए। (गल 6:1)
- गोलाकार करे उस शब्द को जो स्पष्ट करता है कि अपने भाई मसीही को किस प्रकार पुनःस्थापित करना चाहिए। कई बार हम कठोर और निर्णयी बन जाते हैं दूसरे मसीहियों के साथ जो पाप में पकड़े जाते है, लेकिन हमें सौम्य होने की आग्रह की गई है।

सौम्यः "सौम्य" का उसी यूनानी शब्द का अनुवाद है जिससे "दीनता" शब्द हमें मिलता है। एक व्यक्ति जो "दीन" है वह

शैतान हमारा शत्रु

- 2 कुर 2:11
- लूक 22:31
- इफ 6:11-12
- 1पत 5:8

जब आप मसीही बने तब से शैतान आपका शत्रु बन गया। वह लगातार आपको पाप में फंसाने का प्रयास करता रहता है।

- सोचे उस पाप के बारे में जो आप लगातार करते हैं। क्या आप देख सकते है शैतान कैसे आपको उन्हें करने में फंसाता है?
- आप अपने आदतीय पाप में फंसने से कैसे बच सकते हैं?

परमेश्वर के प्रति नम्र है। यह नम्रता तब आता है जब हमें अहसास होता है कि परमेश्वर हमारा सृष्टिकर्ता है और हम केवल उसकी सृष्टि है! नम्रता हमें घमण्ड से दूर रखती है और पाप में पकड़े मसीहियों की सहायता करने में तत्पर रखती है।

उपयोग

- नियमित रूप से दूसरे मसीहियों के साथ जो विश्वास में आगे बढ़ने की इच्छा रखते हैं सहभागिता करो। (प्रे 2:44-47)
- एक कलीसिया से जुडो जो परमेश्वर का आदर करती है तथा उसका वचन सिखाती है और विश्वसनीय रूप से उपस्थित होओ। (इब्रा 10:25)
- अपनी कलीसिया की सेविकाई में शामिल हो जाओ। (इफ 4:11-12)
- अपने कलीसिया की सेविकाई को आर्थिक रूप से समर्थन करते रहो। (गल 6:6; 1ति 5:17; 2कुर 9:7)

§ प्रे 1:14
§ प्रे 2:42
§ 1ति 5:17-18
§ 1थिस 5:12
§ 1कुर 16:1-2

5. परमेश्वर का वचन

परिचय

आपकी समझ से हम कितने दिन बिना खाए जीवित रह सकते है?

1 दिन 3 दिन 10 दिन 20 दिन 40 दिन 60 दिन 100 दिन

यदि आपने *'1 दिन',* पर टिक किया है, तो यह हो सकता है कि अपने जीवन में एक भी भोजन चूका नहीं है। वास्तव में हम 40 दिन बिना भोजन के जीवित रह सकते हैं। परन्तु उसके पश्चात, हमारा शरीर भूखमरा हो जाता है और मृत्यु निकट होती है। जिस प्रकार हमारे प्राकृतिक शरीर को बढ़ने और जीवित रहने के लिए भोजन की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार हमारे आत्माओं को भी खिलाने कि ज़रूरत पड़ती है। ध्यान दें *"दूध"* और *"ठोस भोजन"* का रूपक किस प्रकार से पवित्रशास्त्र में उपयोग किया गया है।

> *"तुम्हें अब तक तो शिक्षक हो जाना चाहिए था, फिर भी यह आवश्यक हो गया है कि कोई तुम्हें फिर से परमेश्वर के वचन की प्रारम्भिक शिक्षा दे। तुम्हें तो ठोस भोजन की नहीं पर दूध की आवश्यकता है।" इब्रा 5:12*

> *"नवजात शिशुओं के समान शुद्ध आत्मिक दूध के लिए लालायित रहो, जिससे कि तुम उद्धार में बढ़ते जाओ,*
> *1पत 2:2*

- रेखांकित करे कि इब्रा 5:12 में दूध के रूपक का क्या अर्थ है।
- गोलाकार करे हमें *"शुद्ध आत्मिक दूध के लिए लालायित"* कैसे रहनी चाहिए 1पत 2:2 में।

इस पाठ में आप सीखेंगेः

- वचन का स्रोत
- वचन का अभिप्राय
- वचन का सामर्थ्य
- वचन का उपयोग

1. वचन का स्रोत

> 📖 *"सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर-श्वासित है और शिक्षा, ताड़ना, सुधार और धर्मिकता की शिक्षा के लिए उपयोगी है, जिससे कि परमेश्वर का भक्त प्रत्येक भले कार्य के लिए कुशल और तत्पर हो जाए। 2ति 3:16-17*

कंठस्थ करो

- गोलाकार करे पवित्रशास्त्र के स्रोत को 2ति 3:16-17 के अनुसार।

▸ क्या "परमेश्वर-श्वारित" पवित्रशास्त्र के दिव्य स्रोत का एक श्रेष्ठ वर्णन है?

- यूनानी शब्द से अनुवादित परमेश्वर-श्वासित का उपयोग नए करार में और कहीं नहीं किया गया है। यद्यपि शब्द यह स्पष्ट नहीं करता कि पवित्रशास्त्र हमें कैसे प्रदान किया गया, लेकिन यह संकेत करता है कि उसका स्रोत दिव्य और अदभुत है!

§ 2पत 1:20-21
§ 1पत 1:10-11

- गोलाकार करे कि कितनी मात्रा में पवित्रशास्त्र परमेश्वर से है।
- यह पद सिखाता है कि बाइबल के हर वचन का स्रोत परमेश्वर है!

2. वचन का अभिप्राय

▸ इन चार पवित्रशास्त्र के उपयोग से आप किस आदर्श को देख सकते हैं?

- 2ति 3:16-17 को पढ़ो और पवित्रशास्त्र के **चार प्रकार** के उपयोग को नीचे लिखोः

§ भज 119:105

_________________ ▸ परमेश्वर के सत्य में प्रशिक्षित करती है

_________________ ▸ परमेश्वर के सत्य पर यकीन दिलाती है

________________ ▸ परमेश्वर के सत्य में पुनःस्थापित करती है

________________ ▸ परमेश्वर के सत्य में जीना सिखाती है।

- रेखांकित करे इन चार वचन के कार्यों के परिणाम को हमारे जीवन में।
- गोलाकार करे हम कितने भले कार्य को करने में सक्षम बनेंगे।

3. वचन का सामर्थ्य

> 🕮 *"और उद्धार का टोप तथा आत्मा की तलवार, जो परमेश्वर का वचन है, ले लो।" इफ 6:17*

- रेखांकित करे "***परमेश्वर का वचन***" कैसे स्पष्ट किया गया है इफ 6:17 में। "***परमेश्वर का वचन***" केवल एकमात्र आक्रमक शस्त्र है जो इफ 6:10-17 में सूचीबद्ध है, जो परमेश्वर के हथियार का विवरण देता है। जो मसीही इस शस्त्र का उपयोग करना सीखता है वह अपने आत्मिक शत्रुओं को पराजित करता है। दुर्भाग्यवश कई मसीही, परमेश्वर के वचन से अनजान, वचन को तलवार सा नहीं परन्तु छोटी छूरी सा उपयोग करते है।

▸ आप के विचार के अनुसार क्यों परमेश्वर के वचन को, आत्मा का तलवार कहा गया है?

§ इब्रा 4:12
§ मत्ती 4:1-11

4. वचन का उपयोग

कंठस्थ करना

> 🕮 *"तेरे वचन को मैंने अपने हृदय में संचित किया है, कि तेरे विरुद्ध पाप न करूं।" भज 119:11*

कंठस्थ करो

▸ परमेश्वर के वचन को हृदय में संचित करने से हम पाप से कैसे बचते हैं?

भजन संहिता 119 परमेश्वर के वचन का एक श्रेष्ठ उद्गीत है, जिसमें प्रोत्साहन सम्मिलित है, और हर मसीही को पढ़ना चाहिए।

- रेखांकित करे कि हमें परमेश्वर के वचन के साथ क्या करना है। शब्द ***"संचित"*** का अर्थ कुछ "***छिपाना या संजोए रखना***" है।

परमेश्वर के वचन को हमारे हृदय में छिपाना है क्योंकि यह *कीमती* है। हृदय शब्द से संबंधित है हमारा *"मन, प्राण, विवेक, भावना, उत्तेजना, इच्छाशक्ति और अभिलाषाएं"*। अर्थात वचन को कंठस्थ करना केवल एक मानसिक अभ्यास नहीं परन्तु सम्पूर्ण व्यक्ति को प्रयोग में लाना है!

कंठस्थ करना सरल है यदि इन चार कदमों में किए जाएः

- पद को तीन बार **पढ़े**
- पद को तीन बार **लिखें**
- पद को तीन बार स्मरण से **बोले**
- अगले दस दिन तक इसे **दोहराएं**

मनन

> 📖 *"क्या ही धन्य है वह मनुष्य जो दुष्टों की सम्मति पर नहीं चलता, न पापियों के मार्ग में खड़ा होता, और न ठट्ठा करने वालों की बैठक में बैठता है।*
> *परन्तु वह तो यहोवा की व्यवस्था से आनन्दित होता और उसकी व्यवस्था पर रात-दिन मनन करता रहता है।*
> *वह उस वृक्ष के समान है जो जल-धाराओं के किनारे लगाया गया है, और अपनी ऋतु में फैलता है, और जिसके पत्ते कभी मुर्झाते नहीं: इसलिए जो कुछ वह मनुष्य करता है वह उसमें सफल होता है। भज 1:1-3*

- गोलाकार करे भज1ः1–3 में वह व्यक्ति क्या है जो दुष्टों, पापियों और, ठट्ठा करने वालों से दूर रहता है।
- रेखांकित करे वह व्यक्ति किससे *"आनन्दित"* होता है?
- रेखांकित करे वह परमेश्वर के वचन के साथ *क्या करता* है?
- रेखांकित करे इस व्यक्ति की तुलना किससे की गई है।
- गोलाकार करे इस व्यक्ति के जीवन–शैली के परिणाम को।

- ▶ एक वृक्ष क्यों अच्छा उदाहरण है उस व्यक्ति का जो परमेश्वर के वचन से आनन्दित होता है?
- ▶ यदि सम्भव हो तो इस पद को कंठस्थ करके अपने हृदय में संचित कर लें!

परमेश्वर के वचन पर मनन करना, जान बूझकर एक पद को बार बार स्मरण में लाकर ध्यान देना है। उसमें के आत्मिक आहार सामग्री को पचाना है। इसका एक तरीका है;

- ❑ एक पद को बार बार अपने मन में बोलना है।
- ❑ हर बार अलग अलग शब्द पर बल देकर बोलते हुए पूरे पद के अर्थ पर ध्यान देना है।

उपयोग

> 📖 *"अपने आप को वचन पर चलने वाले प्रमाणित करो, न कि केवल सुनने वाले जो स्वयं को धोखा देते हैं।*
> *याक 1:22*

- रेखांकित करे वे लोग अपने आपको क्या करते है जो *"केवल वचन को सुनते हैं"*।
- रेखांकित करें हमें इसके विपरीत में वचन के साथ क्या करना है।
- निम्नलिखित परमेश्वर के वचन के पाँच उपयोग हैः

जब तुम पढ़ते, कंठस्थ, या मनन करते हो परमेश्वर के वचन पर, तो जांचों कि यदि कोई ......

- ❑ पाप का स्वीकार करना शेष है
- ❑ प्रतिज्ञाओं का दावा करना है
- ❑ व्यवहार या क्रियाओं को अपनाना या दूर करना है
- ❑ आज्ञाओं का पालन करना है
- ❑ आदर्शों का अनुसरण करना है।

हमने इस पाठ का आरम्भ इस विचार से किया था हम कितने दिन बिना खाए जीवित रह सकते है? जिस प्रकार से हमें एक स्वस्थ शरीर के लिए प्रतिदिन भोजन की आवश्यकता है, उसी प्रकार, हमारे आत्मिक जीवन को स्वस्थ रखने के लिए प्रतिदिन परमेश्वर

कंठस्थ करो

- हम अपने आपको कैसे धोखा देते है यदि हम केवल वचन को सुनते है?
- बाइबल के शिक्षण को सीखतें समय हमें क्या करना चाहिए जो यह पद हमें बताता हैं?

- इस पृष्ठ को बिना देखें पाँच तथ्यों को अपने स्मरण से बोलो।

§ मत्ती 12:50
§ लूक 6:46
§ याक 1:22-25

के वचन को ग्रहण करना है। कई मसीही परमेश्वर के वचन को सप्ताह में केवल एक बार इतवार को सुनते हैं। परमेश्वर के वचन को पढ़ने, कंठस्थ, मनन और उपयोग करने की एक आदत बना लीजिए, ... प्रतिदिन!

6 प्रार्थना

परिचय

आइए एक परीक्षण करे। तीन गहरी साँस लीजिए और आखरी साँस को रोक कर रखीए। अब आप कितनी देर तक बिना साँस लिए रह सकते है? कुछ दिन? बिलकुल नहीं। कुछ घंटे भी नहीं। बिना साँस लिए मनुष्य केवल कुछ ही मिनटों के लिए जीवित रह सकता है।

प्रार्थना भी उसी तरह है। जैसे साँस हमारे जीवन के लिए है वैसी ही प्रार्थना हमारी आत्मिक जीवन के लिए है। यही हमारे नए स्वभाव को शक्तिशाली बनाता और आत्मा को ताज़ा करता है। उसके बिना हमारा मसीही जीवन आत्मिक निष्क्रिय हो जाता है।
क्यों? क्योंकि.....
"प्रार्थना एक ऐसी क्रिया है जो हमें जीवित परमेश्वर के साथ भेंट कराती है!"

प्रार्थना को छोड़ आप बिना पवित्रात्मा के समर्थ्य से हर प्रकार के मसीही कार्य में लीन हो सकते हो। सम्मेलन प्रचारक, रोन डन्न बताते है कि प्रार्थना "मनुष्य का परमेश्वर से भेट" है। यह करने कि लिए आवश्यकता है परमेश्वर से उचित संबंध रखने की।

प्रार्थना के चार पहलू

- वंदन
- पाप–स्वीकार
- धन्यवाद–ज्ञापन
- विनतियां

1. वंदन

वंदन शब्द का अर्थ है आराधना या स्तुति करना।

स्तुति

📖 *"यहोवा के पराक्रम के कामों का वर्णन कौन कर सकता है, या उसका पूरा गुणानुवाद कौन कर सकता है? "*

भज 106:2

भज 106:2 में भजनकार स्तुति करने के *दो प्रकार* को अभिव्यक्त

आराधना

भज 29:2 में आराधना का यूनानी शब्द का अर्थ है साष्टांग प्रणाम करना या दण्डवत् करना। यह आराधना के आचरण को स्पष्ट करता है।

भज100:2, में आराधना के लिए यूनानी में दूसरे शब्द है

करता है।

- रेखांकित करे *"उसका पूरा गुणानुवाद"* करने के और एक भाव को।
- अर्थात परमेश्वर की स्तुति करना उसके *"पराक्रम के कामों"* का वर्णन करना है।

आपके जीवन के परमेश्वर के कुछ *"पराक्रम के कामों"* को सूचीत करेः

1.
2.
3.

- दाऊद के स्तुति की प्रार्थना को पढ़े जो 1इत29ः11-13 में हैः

> 📖 *"हे यहोवा महिमा, सामर्थ्य, गौरव, विजय एवं ऐश्वर्य तेरे ही हैं, क्योंकि आकाश और पृथ्वी में की समस्त वस्तुएं तेरी ही हैं; हे यहोवा राज्य तेरा ही है और तू ही सभी के ऊपर प्रधान एवं महान् ठहरा है। धन एवं प्रतिष्ठा दोनो तुझ ही से प्राप्त होते हैं और तू सभों पर राज्य करता है, और सामर्थ्य और पराक्रम तेरे ही हाथ में हैं; और प्रत्येक को महान् करना एवं सामर्थी बनाना तेरे ही हाथ में है। और इसलिए अब हे हमारे परमेश्वर हम तेरा धन्यवाद करते और तेरे महिमायुक्त नाम की स्तुति करते हैं।"*
>
> *1इत 29:11-13*

- गोलाकार करे परमेश्वर के हर गुणों को दाऊद के अनुसार।
- रेखांकित करे परमेश्वर के प्रति दाऊद के उत्तर को।

उपयोग

आपकी सूची में परमेश्वर के हर पराक्रम के कामों के लिए स्तुति करे। उसे धन्यवाद दे और उसके महिमायुक्त नाम की स्तुति करे।

जिसका अर्थ है *सेवा करना या कार्य करना।* यह पद आराधना की क्रीया को स्पष्ट करता है।

येशू लूक4:8 में आचरण और क्रिया दोनों को साथ में लाता है ।

आराधना की वृध्दि तब होती है जब हम परमेश्वर के गुण और चरित्र के बारें में जान जाते है।

§ दान 2:19-23
§ रो 11:33-36

2. पाप–स्वीकार

प्रार्थना का दूसरा महत्त्व अंग, हमारे पापों की पाप–स्वीकार है। निम्नलिखित पवित्रशास्त्र पढें पाप–स्वीकार के संबंध में।

> *"यदि मैं अपने हृदय में अधर्म को संजोए रखता, तो प्रभु मेरी न सुनता;"* भज 66:18

कंठस्थ करो

> *"मैंने तेरे सामने अपना पाप मान लिया और अपना अधर्म न छिपाया। मैंने कहा, 'मैं अपने अपराध यहोवा के सामने स्वीकार करूँगा' तब तू ने मेरे पाप के दोष को क्षमा कर दिया"* भज 32:5

- रेखांकित करे, भज 66:18 के अनुसार यदि हम अपने पापों को अपने हृदय में *संजोए रखते* हैं तो क्या होगा। यह पद हमें सिखाता है कि पाप और प्रार्थना में एक संबंध है। पाप हमारे परमेश्वर के साथ सहभागिता को तोड देता है, और उसे हमारी प्रार्थना को सुनने में बाधा ड़ालता है। (देखे 1यूह 5:14–15 परमेश्वर के हमारे प्रार्थना को सुनने की महत्त्वता को)
- रेखांकित करे भज 32:5 में भजनकार परमेश्वर के सामने क्या मान लिया?
- रेखांकित करे *परमेश्वर के प्रत्युत्तर को*
- निम्नलिखित भज 51 में दाऊद के पाप–स्वीकार को पढ़े बेतशीबा के साथ व्यभीचार करने के पश्चात।

▸ क्या परमेश्वर उन पापों को क्षमा कर सकता जिन्हें हमने स्वीकार नहीं किया हो? और क्यों?

▸ क्यों परमेश्वर चाहता है कि हम क्षमा प्राप्ति के लिए पाप–स्वीकार करें?

> *"मेरे अधर्म से पूर्णतः धो दे, और मेरे पाप से मुझे शुद्ध कर। क्योंकि मैं अपने अपराधों को मानता हूं, और मेरा पाप निरन्तर मेरे सम्मुख रहता है। मैंने केवल तेरे ही विरुद्ध पाप किया है, और जो तेरी दृष्टि में बुरा है वही किया है; इसलिए तू अपनी बात में खरा और न्याय करने में सच्चा ठहरता है। देख, मैं अधर्म के साथ उत्पन्न हुआ और पाप के साथ अपनी माता के गर्भ में पड़ा।"*

खरे पाप–स्वीकार का परिणाम परमेश्वर का आज्ञापालन है। ध्यान दें कि दाऊद अपने पाप को स्वीकार करने के पश्चात परमेश्वर से शुद्ध और आज्ञाकारी हृदय की प्रार्थना करता है।

"हे परमेश्वर, मुझ में शुद्ध हृदय उत्पन्न कर, और मेरे भीतर स्थिर आत्मा फिर से जागृत कर।"
"अपने उद्धार का आनन्द मुझे फिर से दे, और उद्धार आत्मा देकर मुझे सम्भाल ले।" भज 51:2-5,10,12

- रेखांकित करे उन *चार वस्तुओं* को जो *दाऊद* परमेश्वर से माँगता है पद के अन्त में।

3. धन्यवाद–ज्ञापन

तीसरा पहलू प्रार्थना में धन्यवाद देना है

> 📖 *"प्रत्येक परिस्थिति में धन्यवाद दो, क्योंकि मसीह येशू में तुम्हारे लिए यही इच्छा है।"* थिस 5:18

- गोलाकार करे हमें कब धन्यवाद देना चाहिए। (1थिस 5:18)
- रेखांकित करे हमें धन्यवाद क्यों देना चाहिए? "धन्यवाद दे" एक आज्ञा है। परमेश्वर चाहता है, कि हमारे इच्छा अनुसार हम उसे हर परिस्थिति में धन्यवाद दे। रो 8:28 स्पष्ट करता है कि हम ऐसा क्यों कर सकते है।

> 📖 *"और हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं उनके लिए वह सब बातों के द्वारा भलाई को उत्पन्न करता है, अर्थात् उन्हीं के लिए जो उसके अभिप्राय के अनुसार बुलाए गए हैं।"* रो 8:28

- रेखांकित करे किस कारण हम हर परिस्थिती में धन्यवाद दे सकते है (रो 8:28)
- गोलाकार करे कितने बातों में परमेश्वर हमारे भलाई के लिए उत्पन्न करता है। यह पद हमें सिखाता है कि चाहे हमारे जीवन में कुछ भी हो जाए, परमेश्वर सारे अच्छे और बुरे स्थितियों को हमारी भलाई के लिए उपयोग करता है।

कंठस्थ करो

▸ धन्यवाद देने का क्या लाभ है?

कंठस्थ करो

▸ परमेश्वर "बुरे" अनुभवों को हमारे लाभ के लिए कैसे उपयोग करता है?

परमेश्वर की प्रभुत्त्व

अरथर पिंक कहते हैं, "परमेश्वर की प्रभुत्त्व की परिभाषा उसके प्रधानता के काम है। श्रेष्ठ सृजित प्राणी के भी सबसे ऊपर होते हुए, वह सर्वोपरि, स्वर्ग और पृथ्वी का प्रभु है। किसी के अधीन नहीं, किसी से भी प्रभावित नहीं, एकदम स्वतंत्र।

यह जानते हुए क्या हम हर परिस्थितियों में वास्तविक रूप से धन्य वाद दे सकते हैं?

 हाँ नहीं

उपयोग

अभी प्रार्थना में कुछ समय हर अच्छे या बुरे वस्तुओं के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देते हुए बिताईए, यह जानते हुए कि वह सक्षम है, हर वस्तु को हमारे लाभ के लिए प्रयोग करने में। परमेश्वर को धन्यवाद देना, हमारे विश्वास को प्रदर्शित करता है।

4. विनतियां

परमेश्वर के समक्ष अपनी माँगों को लाना विनती करना है। कई बार, हम चिन्तित होते हैं और भूल जाते है उस एक व्यक्ति को जो हमारी सहायता कर सकता है!

नीचे फिलि 4:6-7 को पढ़ें।

> *"किसी भी बात की चिन्ता न करो, परन्तु प्रत्येक बात में प्रार्थना और निवेदन के द्वारा तुम्हारी विनती धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख प्रस्तुत की जाए। तब परमेश्वर की शान्ति, जो समझ से परे है, तुम्हारे हृदय और मन को मसीह येशू में सुरक्षित रखेगी" फिलि 4:6-7*

- रेखांकित करे फिलि 4:6-7 हमें *चिन्तित* होने के बारे में क्या सिखाता है।
- गोलाकार करें उन शब्दों को जो स्पष्ट करता है कि हम परमेश्वर से कौन सी वस्तु माँग सकते है।
- रेखांकित करे, परमेश्वर के सम्मुख हमारे विनती के परिणाम को

क्या आपने कभी सोचा है क्यों हमारे कुछ विनतियों का उत्तर नहीं प्राप्त हुआ है?

परमेश्वर अपनी मर्ज़ी का मालिक है, केवल उसीकी इच्छा पूरी करता है। कोई भी उसे टोक नहीं सकता था रोक नहीं सकता।"

- यश 46:10
- दान 4:35
- इफ 1:11

कंठस्थ करो

- फिलि 4:6 में किन दो विपरीत भावनाओं को बताया गया है?
- प्रार्थना उन दोनो से कैसे संबंधित है?

निम्नलिखित पवित्रशास्त्र इसका कारण स्पष्ट करता हैः

📖 *"तुम मांगते तो हो पर पाते नहीं, क्योंकि बुरे उद्देश्य से मांगते हो, कि अपने भोग-विलास में उड़ा दो।"*
याक 4:3

📖 *"और जो साहस हमें उसके सम्मुख होता है वह यह है; कि यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार कुछ मांगें, तो वह हमारी सुनता है। यदि हम जानते हैं कि जो कुछ हम उस से मांगते हैं, वह हमारी सुनता है, तो यह भी जानते हैं कि जो कुछ हमने उस से मांगा वह हमें प्राप्त हो चुका है।"*
1यूह 5:14-15

कंठस्थ करो

📖 *"यदि तुम मुझ में बने रहो, और मेरे वचन तुम में बने रहें तो जो चाहो माँगो, और वह तुम्हें दिया जाएगा"*
यूह 15:7

कंठस्थ करो

📖 *"यदि तुम विश्वास करते हो, तो जो कुछ तुम प्रार्थना में मांगोगे वह तुम्हें मिलेगा" मत्ती 21:22*

कंठस्थ करो

- परमेश्वर प्रार्थनाओं के उत्तर पाने के लिए क्यों शर्त स्थापित करता है?
- आप के अनुसार मुख्य शर्त कौन सी है प्रार्थना के उत्तर पाने के लिए?

- रेखांकित करे याक 4:3 में, हम *क्यों* कभी वह वस्तु नहीं प्राप्त करते जिसकी हमने माँग की है।
- गोलाकार करे कि *"बुरे उद्देश्य"* का क्या अर्थ है।
- रेखांकित करे 1यूह 5:14-15 में प्रार्थनाओं के उत्तर प्राप्त करने के शर्त को।
- रेखांकित करे यूह15:7 में प्रार्थनाओं के उत्तर प्राप्त करने के शर्त को।
- रेखांकित करे मत्ती 21:22 में प्रार्थनाओं के उत्तर प्राप्त करने के शर्त को।

हमें किन के लिए प्रार्थना करनी चाहिए ?

📖 *"सर्वप्रथम, मैं आग्रह करता हूं कि विनतियां तथा प्राथनाएं, निवेदन तथा धन्यवाद-ज्ञापन, सब मनुष्यों के निमित्त किए जाएं, राजाओं और सब पदाधिकारियों के लिए, जिससे कि हम सुख-चैन और शान्तिपूर्ण जीवन व्यतीत कर सकें सम्पूर्ण परमेश्वरपरायणता तथा प्रतिष्ठा में।" 1ति 2:1-2*

📖 *"इसलिए तुम परस्पर अपने पापों को मान लो और एक दूसरे के लिए प्रार्थना करो, जिससे कि चंगाई प्राप्त हो। धर्मी जन की प्रभावशाली प्रार्थना से बहुत कुछ हो सकता है।" याक 5:16*

📖 *"प्रार्थना करते रहो पवित्रात्मा में हर परिस्थिति में हर प्रकार की प्रार्थना तथा निवेदन सहित। यह ध्यान रखते हुए सतर्क रहो कि यत्न सहित सब पवित्र लोगों के लिए, निरन्तर प्रार्थना करो" इफ 6:18*

- गोलाकार करे उन सब लोगों को जिनके के लिए हमें प्रार्थना करनी चाहिए इन ऊपर के पद में।

उपयोग

कुछ क्षण बिताए प्रार्थना में, उन सबके लिए जो प्रभु आपके मन में लाता है।

▸ जब प्रेरित पौलुस ने 1ति 2:1 लिखा, तब रोम के राजा सीज़र का शासन था। आप उन शासन के अधिकारियों के लिए किस प्रकार से प्रार्थना करते हो जिन से आप सहमत नहीं हैं ?

▸ एक दूसरे को अपने पाप स्वीकार करने का क्या मूल्य है ?

7. साक्षी देना

परिचय

आप के समझ में मसीही-धर्म को किससे सब से अधिक खतरा है?

- ❑ अभक्त लोग
- ❑ हमारी संस्कृति
- ❑ प्रतिविरोधी सरकार

किसी ने कहा है कि-

"मसीही जो स्वर्ग में आँख बचाते हुए बिना अपने विश्वास को बाँटे घूसना चाहते हैं वे ही सबसे बडा खतरा है मसीही धर्म के लिए"

परमेश्वर की सन्तान होने के नाते, हमारे पास विशेषाधिकार और अधिकार है कि हम दूसरों को परमेश्वर से एक होने में अमंत्रित कर सकते हैं। येशू मसीह में विश्वास रखने और उसे अपना उद्धारकर्ता और प्रभु बनाने से अधिक और कोई भी बडा निर्णय मनुष्य नहीं कर सकता। इस पाठ में हम अपने मसीही विश्वास को दूसरों के साथ बाँटने के पाँच प्रकार सीखेंगे।

अपने विश्वास को बाँटना या साक्षी देना, बढ़ते मसीही के स्वरूप का एक सर्वप्रथम उपादान है। दूसरों को परमेश्वर के चमत्कार से परिवर्तित होते देखकर हमारा विश्वास ताज़ा और उत्तेजित होता है। येशू का प्रभावी साक्षी होने के लिए हमें निम्नलिखित कंठस्थ करना चाहिएः

1. **उपलब्ध होः** अपने जीवन को परमेश्वर में लीन करे। परमेश्वर उपलब्ध सेवको का उपयोग करता है।
2. **प्रार्थनामय होः** परमेश्वर से प्रार्थना करे कि वह आपकी अगुवाई

- ▸ वे मसीही जो अपने विश्वास को नहीं बाँटते, मसीही धर्म के लिए कैसे सबसे अधिक खतरा बन सकते है?
- ▸ आपके अनुसार अधिक मसीही अपने विश्वास को क्यों नहीं बाँटते?
- § रो 10:13-14

करे उन लोगो तक, जिन से आप बाँट सके। प्रार्थना करे कि परमेश्वर अपने वचन के प्रति उनका खुलासा करे।

3. **पवित्रात्मा से परिपूर्ण हो:** केवल परमेश्वर दूसरों को अपनी ओर ला सकता है। हमारी भूमिका केवल पवित्रात्मा से भरकर, उसे अपने प्रेम को दूसरो के साथ हमारे द्वारा बाँटने दें।

§ यूह 6:44

1. अपने साक्षी के द्वारा येशू को बाँटे

हो सकता है कि हमें बाइबल या ईश्वरमीमांसा के बारें में अधिक जानकारी नहीं है, परन्तु स्वयं अपने जीवन के बारे में हम विशेषज्ञ हैं। यद्यपि लोग यह जानने में अधिक रूचि न लें कि हमने परमेश्वर के लिए क्या किया, उनकी रूचि इसमें है कि परमेश्वर ने हमारे लिए क्या किया है। येशू ने हमारे जीवन में क्या किया है, यह हमारी साक्षी है।

§ प्रे 26:1-29

अपने साक्षी को तैयार करने के लिए निम्नलिखित रूपरेखा का प्रयोग करे।

अपनी साक्षी को तैयार करना

1. **आपका जीवन येशू को ग्रहण करने के पहले:** अपने जीवन के उस विशेष भाग को बाँटे जहाँ येशू ने आपको परिवर्तित किया है। अपनी पुरानी बुराई पर अधिक बल न दें।

2. **आप येशू को कैसे जान पाए:** स्पष्ट करे कि आपने येशू के बारे में कैसे सुना, और येशू पर विश्वास रखने का निर्णय आपने कैसा किया। यह उस व्यक्ति जिन से आप बाँट्ते हैं सहायता करेगा येशू को जानने में।

3. **आपका जीवन येशू को ग्रहण करने के बाद:** बाँटे कैसे येशू ने आपको परिवर्तित किया उस जीवन के भाग को जो आपने ऊपर बताया।

- अपने साक्षी को तैयार करने के पहले प्रार्थना करें कि परमेश्वर अपनी कहानी बताने को दे।
- अपने साक्षी को लिखो और एक उपयुक्त शीर्षक से उसे जोडो।
- अपने साक्षी को उस शीर्षक के अनुसार तैयार करो बाएं दिए रूपरेखा के अनुसार।

2. चित्र के द्वारा हमारे विश्वास को बाँटना

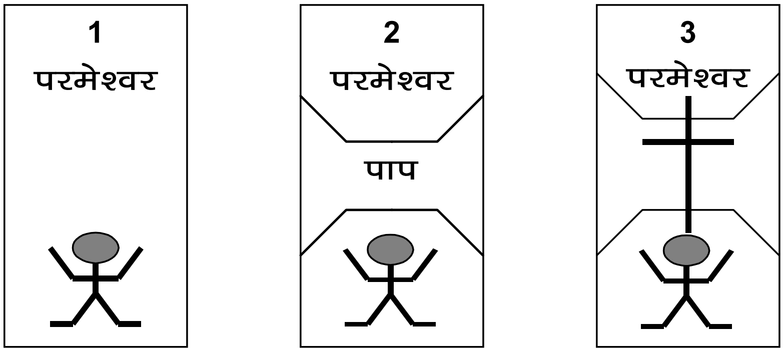

प्रभु हमारा सृष्टिकर्त्ता हम से प्रेम करता है और हमे अनन्त जीवन देता है।

हमारे पाप ने परमेश्वर और उसके जीवन से हमे अलग किया है। मनुष्य इस दूरी को स्वयं पूरा करने में असमर्थ है।

येशू मसीह हमारे पापों के लिए क्रूस पर मरा। केवल उसी के द्वारा हम परमेश्वर के प्रेम और जीवन का अनुभव कर सकते है।

सुसमाचार शीघ्र और सरल रूप से चित्रित किया जा सकता है ऊपर दिए साधारण चित्रों के द्वारा। चित्रों को बनाने के बाद अन्तिम चित्र का प्रयोग करे यह दर्शाने में कि हमें विश्वास रखते हुए क्यों परमेश्वर के पास आना चाहिए, येशू मसीह के द्वारा जो एक पूल है। यह बच्चों के साथ येशू को बाँटने में सर्वश्रेष्ठ तरीका है।

- केवल एक चित्र को बनाओ, और जैसे आप बाँट्ते जाए वैसे उस चित्र को जोड़ते जाओ। (आपको तीन अलग चित्र बनाने की आवश्यकता नहीं)
- उस पवित्रशास्त्र के चार सत्यों को कंठस्थ करो, जो पृष्ट 5, 6 और 7 है; और उनका उपयोग आप बाँट्ते और चित्र बनाते समय करो।

3. प्रदर्शनी के बाद हमारे विश्वास को बाँटना

एक सुसमाचार के प्रदर्शन (पुस्तिका, विडियो, ड्रामा, चालचित्र, टेप आदि के द्वारा) को पढ़ने, देखने या सुनने के बाद, सुसमाचार का परिचय देने के लिए इन चार निम्नलिखित प्रश्नों का उपयोग करे।

1 आपको (पुस्तिका, विडियो, ड्रामा आदि) के बारें में कैसा लगा?

2 क्या आपको इसका अर्थ समझ में आया?

- इन चार प्रश्नों को बिना देखे दोहराईए।

3 क्या आपने येशू में विश्वास किया, आपके पापों को क्षमा करने के लिए, जैसे कि (पुस्तिका, विडियो, ड्रामा आदि) द्वारा प्रदर्शित किया गया है।? ई रो 1:16

4 आप येशू पर विश्वास करना चाहेंगे, है ना?

4. पुस्तिका द्वारा हमारे विश्वास को बाँटना

विभन्न पुस्तिकाएं उपलब्ध है परन्तु सभी का एक ही सन्देश है – येशू मसीह में अनंत जीवन कैसे पाएं। निम्नलिखित एक प्रकार, कॅम्पस क्रूसेड फॉर क्राइस्ट द्वारा निर्माण किया गया है।

लाभ

- **सरल है**ः पुस्तिकाएं साक्षी देना सरल करती है। सुसमाचार के मूल सत्य और एक प्रार्थना शामिल करके एक व्यक्ति को येशू में विश्वास करने की सहायता करता है।
- **स्पष्ट है**ः पुस्तिकाएं सुसमाचार को एक तर्किक क्रम में प्रस्तुत करते है, सामान्यता से, पवित्रशास्त्र के समर्थित चार वाक्यों के द्वारा।
- **छोटा** हैः हम जहां भी जाएं पुस्तिकाएं को सरलता से ले जा सकते हैं।
- **संक्षिप्त है**ः पुस्तिकाएं पढ़ने में 10-15 मिनट ही लेते हैं।
- **देने के लायक है**ः पुस्तिकाएं उन व्यक्तियों के पास छोड़े जा सकते है, जिससे हम बाँटते है, ताकि वे उन्हें बाद में पढ़ सके। कई व्यक्ति येशू के पास इस तरह से आए हैं।
- **पुनःउपयोगी है**ः पुस्तिकाएं कई बार एक से दूसरे को दिए जा सकते है।

पुस्तिकाओं का परिचय

मसीह के विषय से दूसरों को परिचित करवाना ही सबसे बडी बाधा है। उस व्यक्ति की आवश्यकता पर ध्यान देते हुए हमें सुसमाचार

सुनाना है। निम्नलिखित कुछ तरीके है, पुस्तिकाओं से परिचित कराने के जिससे आप उनके साथ बाँट सके –

- ❑ “इस पुस्तिका में दिए गए सन्देश से मुझे अत्याधिक लाभ पहुँचा है। क्या मैं इसे आपके साथ बाँट सकता हूँ?”
- ❑ “क्या कभी आपको किसी ने बताया कि आप परमेश्वर को व्यक्तिगत रूप से कैसे जान सकते है? यह पुस्तिका इसे स्पष्ट करता है। क्या मैं इसे आपके साथ बाँट सकता हूँ?
- ❑ “यदि आप इसी क्षण मर गए, तो क्या आप निश्चित है कि आप स्वर्ग में होंगे? यह पुस्तिका बताता है कि आप कैसे निश्चित हो सकते हैं। क्या मैं इसे आपके साथ बाँट सकता हूँ?

पुस्तिका की प्रस्तुतिः

- **पुस्तिका को ठीक से पकडे** आप दोनों के बीच। ध्यान दें कि उस व्यक्ति को पृष्ठ पढ़ने में सरलता हो जब आप उसके साथ बाँट रहें हो।
- **व्यक्ति के ध्यान को बनाए रखें** उचित शब्दों या चित्रण की ओर संकेत कराते हुए जैसे आप पढ़ रहे हैं। कई बार पृष्ठो को मोडना सहायक मन्द होता है दोनो को एक ही पृष्ठ पर रहने के लिए।
- **केवल पुस्तिका पढ़े!** पुस्तिका के सन्देश के अतिरिक्त और कुछ न जोडो। ऐसा करने पर अकसर वह व्यक्ति उलझ जाता है।

5 प्रार्थना के द्वारा हमारे विश्वास को बाँटना

तथापि कई लोग प्रभु के बारे मे बात करने मे संकोच करते है, ज्यादातर लोग प्रसन्न होते है यदि आप उनके लिए प्रार्थना करे यह येशू को दूसरो के साथ बाँटने का एक बडा अवसर खोल देता है।

आपके मित्र, सहकर्मी, परिचित लोग, पडोसी आदि की जरूरतों के

- ▸ क्या आप और कोई तरीके से सुसमाचार का परिचय दूसरों को दे सकते हैं?

§ यूह 4:7-14
§ प्रे 8:26-35

- ▸ विनतियां और प्रार्थना के उत्तर की एक डायरी रखो। उसमें विनतियां के और उनके उत्तर मिलने के दिनांक को लिखो।
- ▸ हर विनतियों के लिए प्रार्थना करो अपेक्षा रखते हुए कि परमेश्वर उनके जीवन में कार्य करेगा।
- ▸ खोजो कि यदि परमेश्वर आपके प्रार्थनाओ का उत्तर दे रहा है और उन अवसरों को ढूंढ़ो जहाँ आप उसके प्रेम को बाँट सके।

लिए प्रार्थना करने के लिए तत्पर रहो। प्रार्थना करे कि प्रभु उन्हें अपनी ओर खीचें। जैसे परमेश्वर उनके जरुरतें को पूरा करता है, उन अवसरों को ढूंढे कि आप उनके साथ येशू को बाँट सके।

उपयोग

- **दोहराईए** हर उपर के तरीकों को अपने विश्वास को बाँटने में, और उनका अभ्यास करे
- **प्रार्थना करके परमेश्वर से माँगे** कि आपको वे लोग दिखाए, जिन्हें परमेश्वर की क्षमा येशू मसीह में जानने की आवश्यकता है। इनके नामों की एक सूची बनाए जो परमेश्वर आपको स्मरण दिलाता है।
- **हर व्यक्ति के लिए प्रतिदिन प्रार्थना करे** परमेश्वर से माँगते हुए कि वह उन्हे अपनी ओर खीचें।
- **हर अवसर का लाभ उठाएं** जो परमेश्वर आपको देता है और पवित्रात्मा की शक्ति में येशू को बाँटे।
- **उपलब्ध हो**ः उन व्यक्तियों के साथ बाँटने के लिए जिन से आप प्रतिदिन मिलते है। क्या जाने कि परमेश्वर ने कब वह **दिव्य भेंट** का समय नियुक्त किया है, उस व्यक्ति के साथ बाँटने के लिए! (कुल 4:5)
- **हमेशा स्मरण करे** कि परमेश्वर ही हमेशा मनुष्य को अपनी ओर लाता है– हमारे तकनीक या आकर्शण नहीं। लगातार परमेश्वर के आत्मा से भरे रहे और उसके द्वारा उपयोग होने की चेष्टा रखे!

८. आत्मिक गुणन

निम्नलिखित प्रश्नों का आप किस प्रकार उत्तर देंगे?

मैं स्वर्ग के बजाए इधर क्यों हूँ?

- ❑ क्योंकि मेरा घर स्वर्ग में पूरा नहीं हुआ है।
- ❑ क्योंकि मैं अभी तक उतना अच्छा नहीं बना हूँ।
- ❑ क्योंकि परमेश्वर की दृष्टि में मैं उतना सही नहीं हूँ।
- ❑ ऊपर में से कोई भी नहीं।

§ यूह 4:34
§ यूह 17:4
§ प्रे 20:24

हमारा स्वर्ग के बजाय यहाँ होने का कारण यह है कि हम येशू के महा–आदेश को पूरा करें।

- येशू के अन्तिम महा आदेश को पढोः

> *"तब येशू ने उनके पास आकर कहा, 'स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिए जाओ और सब जातियों के लोगों को शिष्य बनाओ तथा उन्हें पिता, पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा दो, और जो जो आज्ञाएं मैंने तुम्हें दी है उनका पालन करना सिखाओ। और देखो, मैं युग के अन्त तक सदैव तुम्हारे साथ हूँ।"*
>
> *मत्ती 28:18-20*

कंठस्थ करो

महा–आदेश

मत्ती 28:18–20 में येशू का अन्तिम आदेश है अपने शिष्यों के लिए जिसे महा–आदेश कहा जाता है क्योंकि उसमें येशू उन्हें सुसमाचार को सारे संसार को ले जाने का आदेश देता है।

▸ येशू ने महा–आदेश की शुरुवात "स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है" से क्यों किया?

प्रमुख क्रिया इस आदेश में है *"शिष्य बनाओ"*। तीन अलग क्रिया जो प्रमुख क्रिया को जोड़ती है स्पष्ट करता है कि कैसे इन्हें संपादित करना चाहिए। क्या तुम इन्हें ढूंढ़ सकते हो?

§ यूह 17:2

- हर एक को गोलाकार करे।

जाओ- आप येशू के लिए लोगों जीत नहीं सकते जब तक आप उनके पास नहीं जाते। यह क्रिया बताती है कि परमेश्वर की अपेक्षा है कि हम जाएंगे।

- गोलाकार करे हमें ***कहाँ*** जाना है येशू के महा-आदेश के अनुसार।

बपतिस्मा दो- *"बपतिस्मा"* शब्द स्वच्छता, नई पहचान और नए संबंध का चिन्ह है मसीहियों के पास जब वे अपना विश्वास येशू में रखते है।

- रेखांकित करे मसीहियों को किस नाम में बपतिस्मा दिया जाता है।

सिखाओ- शिष्य बनाने में सिखाना सम्मिलित है।

- रेखांकित करे हमें नए शिष्यों को क्या सिखाना चाहिए।

योजना

प्रे 1:8 हमें एक योजना देता है ***"सब जातियों के लोगों को शिष्य बनाने के लिए"*** जिसका हमें अनुसरण करना है।

> *"परन्तु जब पवित्रात्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे, और यरुशलेम, सारे यहूदिया और सामरिया में, यहां तक कि पृथ्वी के छोर तक तुम मेरे साक्षी होंगे।"*
>
> *प्रे 1:8*

कंठस्थ करो

- प्रे 2:14-42
- प्रे 8:1
- प्रे 22:17-21

- रेखांकित करे तीन भुगोल क्षेत्रों को जहाँ जहाँ हमें येशू का साक्षी होना है।

येरूशलेम- येरूशलेम का शहर शिष्य के घर का प्रतीक है। अर्थात उसका परिवार, मित्र, शहर।

यहूदिया और सामरिया- यह दो प्रान्त, आस पास के क्षेत्रों का प्रतीक है। अर्थात प्रान्त, राष्ट्र या देश।

यहूदिया के अन्त तक

यरूशलेम

पृथ्वी के छोर तक- यह पृथ्वी के शेष लोगों का प्रतीक है। अर्थात सब जातियों को शामिल करती है।

सामरिया
सम्पर्ण पृथ्वी

हम लोगों को अपने *येरूशलम* में साक्षी दे सकते है। सभी लोगों को अपने *यहूदिया और सामरिया* में जीतने के लिए हम दूसरे मसीहियों के साथ कार्य कर सकते हैं। लेकिन *पृथ्वी के छोर तक* पहुँचने के लिए मसीहियों को दूसरे देशों में जाकर उन लोगों के मध्य में रहने की आवश्यकता है। हर मसीही को जाने की इच्छा रखनी चाहिए, पर यदि हम न भी जाए, तो हमें प्रार्थना और धन के साथ उनकी सहायता करनी चाहिए जो जाते हैं।

- आपका येरूशलेम कहाँ है?
- आपकी यहूदिया और सामरिया कहाँ है?
- आपका *पृथ्वी के छोर* तक पहुँचने की क्या योजना है?

युक्ति – शिष्यत्त्व

हम जानते है कि हमारा लक्ष्य, सभी जातियों को शिष्य बनाने का है, प्रश्न है कैसे? निम्नलिखित है शिष्यत्त्व की प्रक्रिया कॅम्पस क्रूसेड फॉर क्राईस्ट द्वारा निर्मितः–

जीतो	निर्माण	भेजो
लोगों को येशू “जाओ” और “बपतिस्मा दो”	*लोगों को येशू में* “सिखाओ”	*लोगो को येशू के निमित्त के लिए* “जो जो आज्ञाएं मैंने तुम्हें दी है उनका पालन करो”

- *“जो जो आज्ञाएं मैंने तुम्हें दी है उनका पालन करना सिखाओ।”*- येशू ने शिष्यों को यह आज्ञा दी है, उसे पूरा करने के परिणामस्वरूप हम कैसे दूसरे लोगों को येशू के लिए जीतकर निमार्ण कर सकते हैं?

इस प्रकार अधिक से आधिक मसीही लोग शिष्य बनाने में शामिल हाते हैं। इसका परिणाम आत्मिक गुणन है।

आत्मिक गुणन

> 📖 *“और जो बातें तू ने बहुत से गवाहों के समक्ष मुझ से सुनी हैं, उन्हें ऐसे विश्वासयोग्य मनुष्यों को सौंप दे जो दूसरों को भी सिखाने के योग्य हों।”* 2ति 2:2

आत्मिक गुणन का तथ्य 2ति 2:2 में पाया जाता है।

- रेखांकित करे हमें उन बातों के साथ क्या करना है जो हमें सिखाया गया है।

कंठस्थ करो

- आपके अनुसार एक *“विश्वासयोग्य मनुष्य”* कैसा व्यक्ति है?
- 1कुर 4:2
- लूक 6:40
- लूक 14:26

- **रेखांकित करे "विश्वासयोग्य मनुष्यों" को क्या करना चाहिए उसके साथ जो उन्होंने सीखा है।**

संख्यात्मक परिणामों की तुलना करे

आत्मिक जोड़ और आत्मिक गुणन

आत्मिक जोड़ (100 व्यक्ति को प्रतिदिन जीतें)	**वर्ष**	**आत्मिक गुणन** (हर 6 माह में एक व्यक्ति को जीते, बढ़ाएं और भेजें)
36,000	1	4
72,000	2	16
1,08,000	3	64
1,44,000	4	256
1,80,000	5	1024
2,16,000	6	4096
2,52,000	7	16,384
2,88,000	8	65,536
3,24,000	9	2,62,144
3,60,000	10	10,48,576
3,96,000	11	41,94,304
4,32,000	12	1,67,77,216
4,68,000	13	6,71,08,864
5,04,000	14	26,84,35,456
5,40,000	15	107,37,41,824
5,76,000	16	429,49,67,296
6,12,000	17	1717,98,69,184

एक व्यक्ति भी फर्क ला सकता है।

परमेश्वर चाहता है कि आप वह व्यक्ति बने!

अनन्त जीवन होगी!
संसार को येशू के लिए जीतने का परमेश्वर का आन्दोलन है। अपने आपको इस आन्दोलन के प्रतिबद्ध

ध्यान दें हर आने वाली पीढ़ी बढ़ती जाती है जैसे जो सीखे हुए हैं वे अब दूसरों को सिखाते हैं। यह **आत्मिक गुणन** का शानदार कार्य है।

आत्मिक जोड़

लोगों को येशू के लिए जीतना, परन्तु उनका न तो निमार्ण करना और न उन्हें भेजना दूसरों को जीतने और निर्माण करने के लिए।

आत्मिक गुणन

लगातार जीतते, निमार्ण और भेजते रहना ताकि वे दूसरों को जीतते, निमार्ण और भेजते रह सके।

यदि हमें संसार को जीतना है तो हमें आत्मिक जोड को आत्मिक गुणन में बदलना चाहिए।

आकृति (बाएं)

यह आकृति द्वारा दर्शाया गया है कि कितने लोग येशू के लिए जीते जा सकते हैं एक वर्ष में। हमें लगातार एक व्यक्ति को हर छह महीने में शिष्य बनाते रहना चाहिए, जो बाद में स्वयं दूसरों को शिष्य बनाता रहेगा। इस प्रकार यह सम्भव है कि हम पूरे संसार को 17 वर्षो में जीत सकते है! *आत्मिक गुणन* के द्वारा एक व्यक्ति सारे संसार को येशू के लिए जीत सकता है।

एक प्रभावशाली जीवन

क्या आपने कभी भी अपने जीवन में कुछ प्रभावशाली कार्य करने का विचार किया है? आप मसीह के लिए जीतने, निर्माण करने और भेजने के कार्य में ही प्रभावशाली होंगे। उन लोगों के लिए आप के यत्नों का परिणाम केवल भरपूर जीवन नहीं परन्तु

शिष्यत्त्व का करार

"केवल एक जो यह जीवन है जल्द ही बीतने वाली है,
केवल वही रहेगा जो येशू के लिए किया कार्य है!"

मेरे प्रभु और उद्धारकर्ता येशू मसीह के
महा–आदेश के प्रति आज्ञाकारी होते हुए,
मैं...
स्वयं को प्रतिबद्ध करता हूँ कि
लोगों को येशू के लिए जीतूंगा
लागों को येशू में निर्माण करूंगा और
लोगों को येशू के निमित्त भेजूंगा,

जिससे कि सम्पूर्ण संसार जान जाए कि
येशू मसीह प्रभु है!

मैं यह करार करता हूँ
.... दिनांक में ....दिन में ...., ...!

परमेश्वर मेरा साक्षी है!